بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 25
Issue - 07

राह-ए-ईमान

जुलाई
2023 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूचि

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ).....4
5. सम्पादकीय 6
6. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना 7
7. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 14.4.2023).....8
8. अरबईन नम्बर-2.....12
9. रिपोर्ट मजलिस खुद्दामुल अहमदिया कादियान.....20
10. हुज़ूर अनवर से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर.....22
11. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

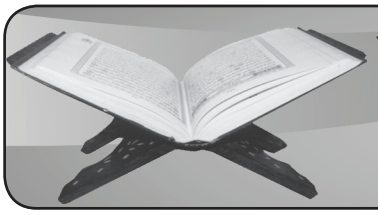

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَاۤ اِلَّا هُوَ ؕ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

अनुवाद:- (हे रसूल !) तेरे विरोधी तुझ से क़यामत के बारे में प्रश्न करते हैं कि वह कब आएगी? तू कह दे कि उस का ज्ञान केवल मेरे रब्ब को ही है। वह उसे उसके (नियमित) समय पर वही प्रकट करेगा। हाँ ! वह आसमानों में भी और ज़मीन में भी भारी होगी और तुम्हारे पास अचानक ही आ जाएगी। वे तुझ से क़यामत के बारे में भी इस तरह सवाल करते हैं कि मानो तुझ पर भी उस का समय जानने की धुन सवार है। तू कह दे (मेरे लिए तो इतना काफ़ी है) कि उस का ज्ञान केवल अल्लाह को है, किन्तु बहुत से लोग इसे नहीं जानते।

(सूरह आराफ़ - 188)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत बराअ बिन आज़िब बताते हैं कि मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ अठारह सफर किए। मैंने कभी नहीं देखा कि आपने ज़ुहर की नमाज़ से पहले की दो रकअत सुन्नत नमाज़ कभी छोड़ी हो। (अबू दाऊद किताबुस्सलात)

2. हज़रत हफसा रज़ि अल्लाह अन्हा वर्णन करती हैं कि जब मुअज़्ज़िन सुबह की अज़ान देता तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दो रकअत सुन्नत पढ़ना शुरू कर देते और हल्की पढ़ते। मुस्लिम की रिवायत है कि फज्र के तुलूअ के बाद आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दो रकअत सुन्नत के अलावा और कोई सुन्नत या नफिल नमाज़ नहीं पढ़ते थे। (मुस्लिम किताबुस्सलात)

3. हज़रत महमूद बिन लबीद वर्णन करते हैं कि एक बार आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारे मुहल्ले में आए और मस्जिद में मग़रिब की नमाज़ पढ़ाई। जब आपने सलाम फेरा तो नमाज़ के हाज़रीन से फरमाया कि (मग़रिब की) दो सुन्नतें अपने घर जाकर पढ़ो।

(मसनद अहमद जिल्द 5 पृष्ठ 427)

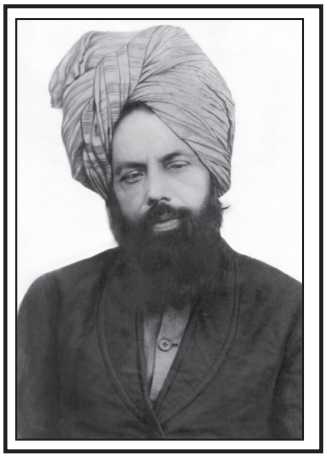

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

शत्रु का सम्मान

इसके बाद इसी सम्मान के विषय में हज़रत अक़्दस ने अपने ख़ून के मुक़द्दमे में एक घटना सुनाई। जिससे पता चलता है कि आप को हर एक की प्रतिष्ठा, यहां तक कि अपने दुश्मन की प्रतिष्ठा की भी कितनी परवाह है। आप ने आदेश दिया कि :

इसी हत्या के मामले में अदालत में हमारे एक विरोधी गवाह का मान कम करने के इरादे से हमारे वकील ने उसकी मां का नाम पता करना चाहा, लेकिन मैंने उसे पूछने से रोक दिया और कहा कि ऐसा प्रश्न न करो जिसका वह उत्तर न दे सके और ऐसा दाग़ कभी न लगाओ जिससे वह कभी हटा न सके। हालांकि इन्हीं लोगों ने मुझ पर झूठा आरोप लगाया। झूठा मुक़द्दमा किया। झूठ पर झूठ बोले और हत्या और कारावास के प्रयासों में एक पल भी न रुके। मेरे सम्मान पर क्या-क्या हमले कर चुके थे? अब आप ही बताइये कि मुझमें ऐसा कौन सा भय था जिसने मेरे वकील को ऐसा प्रश्न पूछने से रोका। केवल बात यह थी कि मैं इस बात पर अडिग हूँ कि किसी पर इस तरह से हमला न हो कि यह वास्तव में उसके दिल को सदमा दे और उसे बचने का कोई रास्ता न रहे।

इस पर एक निष्ठावान ख़ादिम ने कहा, "हुज़ूर मेरा दिल अब तक असमंजस में है कि यह सवाल उससे क्यों नहीं पूछा गया?" आपने फरमाया कि "मेरा दिल न माना।" उसने फिर कहा कि यह सवाल अवश्य पूछा जाना चाहिए था। आपने फरमाया कि: ख़ुदा ने दिल ही ऐसा बनाया है, तो बताओ मैं क्या करूँ।

जालंधर से आए एक सज्जन ने पूछा कि भारतीय सेना ने वहां कई लोगों को हिरासत में लिया है, इसका क्या किया जाए?

आप ने फरमाया: धैर्य रखें। इसी तरह अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ज़माने में लोग उनकी निंदा करते थे। लेकिन आप हंसते और कहते, "उनकी निंदा को क्या करूँ मेरा नाम तो ख़ुदा ने पहले ही मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रख दिया है।" इसी प्रकार सर्वशक्तिमान ख़ुदा ने भी मुझे इल्हाम किया जो आज से बाइस वर्ष पूर्व से बराहीन में छपा है। يَحْمَدُكَ اللّٰهُ अर्थात ख़ुदा तेरी प्रशंसा करता है।

झूठ एक ऐसी चीज़ है जिससे एक दिन इंसान थक जाता है। फिर यदि ख़ुदा सामर्थ्य देता है तो वह तौबा करता है अन्यथा वह इसी प्रकार असफल मरता है। (मल्फ़ूज़ात जिल्द-4)

★ ★ ★

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

तीसरे प्रश्न का उत्तर...

किन्तु इसी इन्जील से प्रकट है कि यहूदा इस्क्रियूती इस तख्त से वंचित रह गए। उसके कानों ने तख्त पर बैठने की ख़बर सुन ली परन्तु उसे तख्त पर बैठना प्राप्त न हुआ। अब ईमानदारी और सच्चाई से यह प्रश्न पैदा होता है कि यदि हज़रत मसीह को इस व्यक्ति के मुर्तद और बुरी आख़िरत होने का पहले से ज्ञान होता तो क्यों उसको तख्त पर बैठने की झूठी ख़ुशख़बरी सुनाते। ऐसा ही एक बार आप अंजीर का एक वृक्ष दूर से देखकर अंजीर खाने की नीयत से उसकी ओर गए परन्तु जा कर जो देखा तो मालूम हुआ कि उस पर एक भी अंजीर नहीं तो आप बहुत नाराज़ हुए और क्रोध की हालत में उस अंजीर को बद्दुआ (श्राप) दी जिसका कोई दुष्प्रभाव अंजीर पर प्रकट न हुआ। यदि आप को कुछ परोक्ष का ज्ञान होता तो फल रहित वृक्ष की ओर उसका फल खाने के इरादे से क्यों जाते।

ऐसा ही एक बार आपके शरीर को एक औरत ने छुआ था तो आप चारों ओर पूछने लगे कि मेरा शरीर किस ने छुआ है? अगर कुछ परोक्ष का ज्ञान होता तो शरीर को छूने वाले का पता लगाना तो कोई कठिन कार्य न था। एक और बार आपने यह भविष्यवाणी भी की थी कि इस युग के लोग गुज़र न जायेंगे जब तक यह सब कुछ (अर्थात् मसीह का दोबारा दुनिया में आना और सितारों का गिरना इत्यादि) न हो परन्तु स्पष्ट है कि न उस युग में कोई सितारा आसमान का पृथ्वी पर गिरा और न हज़रत मसीह अदालत के लिए दुनिया में आए और वह सदी तो क्या उस पर अठारह सदियां और भी गुज़र गईं और उन्नीसवीं गुजरने के क़रीब है। अत: हज़रत मसीह के ग़ैब के ज्ञान से अनभिज्ञ होने के लिए यही कुछ गवाहियाँ पर्याप्त हैं जो किसी और किताब से नहीं अपितु चारों इन्जीलों से देख कर हमने लिखीं हैं दूसरे इस्राईली नबियों का भी यही हाल है। हज़रत याकूब नबी ही थे परन्तु उन्हें कुछ ख़बर न हुई कि उसी गाँव के बियाबान में मेरे बेटे पर क्या गुज़र रही है। हज़रत दानियाल उस अवधि की ख़ुदा तआला ने बुख्त नसर के स्वप्न की उन पर ताबीर खोल दी कुछ भी ज्ञान नहीं रखते थे कि स्वप्न क्या है और उसकी ताबीर क्या है?

अत: इस समस्त अनुसंधान से स्पष्ट है कि नबी का यह कहना कि यह बात ख़ुदा को मालूम है मुझे मालूम नहीं बिलकुल सच और अपने स्थान पर चरितार्थ तथा सर्वथा उस नबी का सम्मान और उसका अब्द (बन्दा) होने का गर्व है अपितु इन बातों से अपने कृपालु आक़ा के आगे उसकी शान बढ़ती है न यह कि उसके नुबुव्वत के पद में कुछ विकार अनिवार्य आता है। हाँ यदि यह अनुसंधान स्वीकार हो कि ख़ुदा तआला के बताने से जो ग़ैब के रहस्य प्राप्त होते हैं वे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कितने हुए तो मैं इस बात का एक बड़ा सबूत प्रस्तुत करने के लिए तैयार हूँ कि तौरात

इन्जील और समस्त बाइबल में नबियों की जितनी भविष्यवाणियाँ लिखी हैं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियाँ संख्या तथा गुणवत्ता उन से हज़ार गुना से भी अधिक हैं जिन का विवरण नबवी हदीसों की दृष्टि से जो बड़ी छान-बीन से लिखी गई हैं मालूम होती है और संक्षिप्त तौर पर परन्तु पर्याप्त और संतोषजनक तथा नितांत प्रभावी वर्णन पवित्र क़ुर्आन में मौजूद है। फिर अन्य धर्मावलम्बियों की तरह मुसलमानों के हाथ में केवल किस्सा ही नहीं अपितु वह तो हर सदी में ग़ैर क़ौमों को कहते रहे हैं और अब भी कहते हैं कि यह सब इस्लाम की बरकतें हैं हमेशा के लिए मौजूद हैं। भाइयो! आओ पहले आज़माओ फिर स्वीकार करो। परन्तु इन आवाजों को कोई नहीं सुनता। ख़ुदा तआला की हुज्जत उन पर पूरी है कि हम बुलाते हैं वे नहीं आते और हम दिखाते हैं वे नहीं देखते। उन्होंने आँखों को कानों को पूर्णतया हम से फेर लिया ताकि न हो कि वे सुनें और देखें और हिदायत पायें।

दूसरा बोधभ्रम जो ऐतराज़ करने वाले ने प्रस्तुत किया है अर्थात् यह कि असहाब-ए-क़हफ़ की संख्या के बारे में पवित्र क़ुर्आन में ग़लत वर्णन है यह निरा दावा है। ऐतराज़ कर्ता ने इस बारे में कुछ नहीं लिखा कि वह वर्णन क्यों ग़लत है और उसके मुकाबले पर सही वर्णन कौन सा और उसके सही होने पर कौन से तर्क हैं ताकि उसके तर्कों पर विचार किया जाए और संतोषजनक उत्तर दिया जाए। यदि ऐतराज़ कर्ता को क़ुर्आन के वर्णन पर कुछ आपत्ति थी तो उसके कारण प्रस्तुत करने चाहिए थे। कारण प्रस्तुत करने के बिना यों ही ग़लत ठहराना सत्याभिलाषी का कार्य नहीं है।

तीसरा बोधभ्रम ऐतराज़ कर्ता के हृदय में यह पैदा हुआ है कि पवित्र क़ुर्आन में लिखा है कि एक बादशाह (जिसके भ्रमण का वर्णन पवित्र क़ुर्आन में है।) भ्रमण करता-करता किसी ऐसे स्थान तक पहुंचा जहाँ उसे सूर्य दलदल में अस्त होता दिखाई दिया। अब ईसाई साहिब अवास्तविक से वास्तविक की ओर ध्यान देकर यह ऐतराज़ करते हैं कि सूर्य इतना बड़ा होकर एक छोटे से दलदल में क्योंकर छुप गया। यह ऐसी बात है कि जैसे कोई कहे कि इन्जील में मसीह को ख़ुदा का बर्रा लिखा है यह क्योंकर हो सकता है। बर्रा तो वह होता है जिसके सर पर सींग और शरीर पर ऊन इत्यादि भी हो और चारपायों की तरह सर झुका कर चलता और वे वस्तुएं खाता हो जो बर्रे खाया करते हैं? हे साहिब! आप ने कहाँ से और किस से सुन लिया कि पवित्र क़ुर्आन ने वास्तविक तौर पर सूर्य के दलदल में छुपने का दावा किया है। पवित्र क़ुर्आन तो केवल विचार की नक़ल के तौर पर इतना कहता है कि उस व्यक्ति को उसकी दृष्टि में दलदल में सूर्य छुपता हुआ मालूम हुआ अत: यह तो एक व्यक्ति के देखने का हाल वर्णन किया गया है कि वह ऐसे स्थान पर पहुंचा जिस स्थान पर सूर्य किसी पहाड़ या आबादी व वृक्षों की ओट में छुपता नज़र नहीं आता था जैसा कि सामान्य नियम है अपितु दलदल में छुपता हुआ मालूम होता था। निष्कर्ष यह कि उस स्थान पर कोई आबादी, वृक्ष या पहाड़ क़रीब न थे अपितु जहाँ तक दृष्टि वफ़ा करे उन वस्तुओं में से किसी वस्तु का निशान दिखाई नहीं देता था केवल एक दलदल था जिसमें सूर्य छुपता दिखाई देता था। (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ 47-51)

☆ ☆ ☆

सम्पादकीय

ख़िलाफ़त का आज्ञापालन

जमात अहमदिया में ख़िलाफ़त और निज़ाम जमाअत के आज्ञापालन पर जो इतना ज़ोर दिया जाता है ये इस लिए है कि जमाती निज़ाम को चलाने के लिए एकरूपता पैदा होनी ज़रूरी है और इस ज़माने के लिए जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ऐलान है कि मसीह मौऊद के आने के बाद जो ख़िलाफ़त क़ायम होनी है वो अला मिनहाजे नबुव्वत होनी है और वो शश्वत ख़िलाफ़त है और जिसके बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहस्सलाम ने भी फ़रमाया है कि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का देखना भी ज़रूरी है और उस का आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वो शश्वत है जिसका सिलसिला क़यामत तक नहीं टूटेगा। फिर आप ने फ़रमाया कि "ख़ुदा ने मुझे मुख़ातिब करके फ़रमाया कि मैं अपनी जमात को सूचना दूं कि जो लोग ईमान लाए ऐसा ईमान कि उस के साथ दुनिया की मिलौनी नहीं और वो ईमान नफ़ाक़ या बुज़दिली से आलूदा नहीं और वो ईमान इताअत के किसी दर्जा से महरूम नहीं। ऐसे लोग ख़ुदा के पसंदीदा लोग हैं"। (रिसाला अल वसीयत, रुहानी ख़ज़ाइन जिल्द 20 पृष्ठ 309)

तो जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया इस दाइमी क़ुदरत के साथ वाबस्ता रहने के लिए, और ख़िलाफ़त से वाबस्ता रहने के लिए इताअत के वो मयार क़ायम करने की ज़रूरत है जो आला दर्जा के हों जिनसे बाहर निकलने का किसी अहमदी के दिल में ख़्याल तक पैदा ना हो। बहुत से अवसर आ सकते हैं जब निज़ाम जमात के ख़िलाफ़ शिकवे पैदा हों। हर एक की अपनी सोच और ख़्याल होता है और किसी भी मुआमले में राय अलग हो सकती हैं, किसी काम करने के तरीक़ से मतभेद हो सकता है। लेकिन निज़ाम जमात और निज़ाम ख़िलाफ़त की मज़बूती के लिए जमाती निज़ाम के फ़ैसला को या अमीर के फ़ैसला को मानना इसलिए ज़रूरी होता है कि ख़लीफ़-ए-वक़्त ने इस फ़ैसले पर ok किया होता है या अमीर को अधिकार दिया होता है कि तुम मेरी तरफ़ से फ़ैसला कर दो। अगर किसी के दिल में ये ख़्याल हो कि ये फ़ैसला ग़लत है और इस से जमाती मफ़ाद को नुक़्सान पहुंचने का डर है तो ख़लीफ़-ए-वक़्त को सूचना करना काफ़ी है। फिर ख़लीफ़-ए-वक़्त जाने और उस का काम जाने। अल्लाह ताला ने उसको ज़िम्मेदार और निगरान बनाया है और जब ख़लीफ़ा, ख़िलाफ़त के मुक़ाम पर अपनी मर्ज़ी से नहीं आता बल्कि ख़ुदा ताला उस को इस मुक़ाम पर सुशोभित करता है तो फिर ख़ुदा ताला उस के किसी ग़लत फ़ैसले के ख़ुद ही बेहतर परिणाम पैदा फ़र्मा देगा। क्योंकि उस का वादा है कि ख़िलाफ़त की वजह से मोमिनों की भय की हालत को अमन में बदल देगा। मोमिनों का काम सिर्फ ये है कि अल्लाह की इबादत करें, उसके आदेशों का पालन करें और उसके रसूल के आज्ञापालन की कोशिश करें और क्योंकि ख़लीफ़ा नबी के जारी किए हुए निज़ाम को चलाने हेतु जमात को नसीहत करता है और शरीयत के आदेशों को लागू करने की कोशिश करता है इसलिए उस का आज्ञापालन भी करो और उसके बनाए हुए निज़ाम की इताअत भी करो।

अब इस्लाम की तरक़्क़ी सिर्फ और सिर्फ खिलाफत से ही जुड़ी है, आओ खिलाफत की छत्रछाया में आ जाओ कि यही वह किला है जो धार्मिक फ़ितनों से आपको सुरक्षित रखेगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना

आर्यों को सम्बोधन

अज़ीज़ो ! दोस्तो ! भाइयो सुनो बात
ख़ुदा बख़्शे तुम्हें आली ख़्यालात[1]
हमें कुछ कीं[2] नहीं तुम से प्यारो!
न कीं की बात है तुम ख़ुद विचारो
अगर खींचे कोई कीने की तलवार
तो उस से कब मिले बिछड़ा हुआ यार
ग़र्ज़ पन्दो[3] नसीहत है न कुछ और
ख़ुदा के वास्ते तुम ख़ुद करो ग़ौर
कि गर ईश्र नहीं रखता ये ताक़त
के इक जाँ भी करे पैदा ब- क़ुदरत[4]
तो फिर उस पर ख़ुदाई का गुमाँ[5] क्या
व गर क़ुदरत भी फिर वह ना[6] तवाँ क्या
कहाँ करती है अक़्ल उस को गवारा[7]
कि बिन क़ुदरत हुआ ये जगत सारा
व गर ख़ालिक़ तुम उसको मानते हो
तो फिर अब नातवाँ क्यों जानते हो
भला तुम ख़ुद कहो इंसाफ़ से साफ़
के ईश्वर के यही लायक़ हैं औसाफ़
के कर सकता नहीं इक जाँ को पैदा
न इक ज़र्रा हुआ उस से हवैदा[8]
न उन बिन चल सके उस की ख़ुदाई
न उन बिन कर सके ज़ोर आज़माई

(अल्हकम जिल्द 7, 28 मई 1992)

---

1. उच्च विचार। 2. ईर्ष्या। 3. अच्छी बात कहना। 4. ताक़त के साथ। 5. ख़्वाल। 6. कमज़ोर। 7. विश्वास। 8. स्पष्ट।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 26.5.2023 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

ख़िलाफ़ते हक़्क़ह (सच्ची ख़िलाफ़त) के समर्थन को प्रदर्शित करने वाली कुछ ईमान वर्धक घटनाओं का वर्णन।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जब यह सूचना दी कि आपका इस दुनिया से विदा होने का समय निकट आ गया है तो आपने जमाअत को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया- अल्लाह तआला दो प्रकार की क़ुदरत प्रकट करता है, पहले स्वयं नबियों के हाथ से अपनी क़ुदरत दिखाता है, दूसरे ऐसे समय पर जब नबी के निधन के बाद कठिनाईयों का सामना हो जाता है तथा दुशमन ज़ोर पकड़ जाते तथा समझते हैं कि अब काम बिगड़ गया तथा विश्वास कर लेते हैं कि अब यह जमाअत नष्ट हो जाएगी और स्वयं जमाअत के लोग भी विचलित हो जाते हैं तथा उनकी कमरें टूट जाती हैं और कई अभागे मुर्तद (जमाअत से विमुख) होने की राहों पर चले जाते हैं, तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपने शक्ति शाली क़ुदरत को प्रकट करता है तथा गिरी हुई जमाअत को संभाल लेता है। अतएव वह जो अन्त तक संयम से काम लेता है ख़ुदा तआला उसको चमत्कार दिखाता है, जैसा कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी के समय में हुआ जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौत एक बिना समय पर आने वाली मौत समझी गई तथा अनेक मूढ़ आदिवासी मुर्तद हो गए तथा सहाबा रज़ी. भी दु:ख के मारे दीवानों की भांति हो गए, तब ख़ुदा तआला ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ को खड़ा करके दोबारा अपनी क़ुदरत का नमूना दिखाया तथा इस्लाम का विनाश होते होते थाम लिया तथा उस वादे को पूरा किया जो फ़रमाया था-

وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا

अर्थात- भय के बाद हम फिर उनके पाँव जाम देंगे।

ऐसा ही हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के समय में हुआ जब वे मिस्र तथा कनआन की राह में

पहले उससे कि जो बनी इसराईल को वादे के अनुसार उद्देश्य की मंज़िल को पहुचावें, फ़ौत हो गए। तब बनी इसराईल में एक मातम बर्पा हुआ वे चालीस दिन तक रोते रहे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना अनिवार्य है तथा उसका आना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्यूँकि वह अनन्त है जिसका सिलसिला क़यामत तक नहीं टूटेगा और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ, परन्तु जब मैं जाऊँगा तो फिर ख़ुदा तआला उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदैव तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का बराहीने अहमदिया में वादा है। अत: जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का देहान्त हुआ तो अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार हज़रत मौलान नूरुद्दीन साहब रज़ी के हाथ पर जमाअत को एकत्र किया। कुछ लोग चाहते थे कि अंजुमन के हाथ में व्यवस्था रहे परन्तु उन्होंने अपने लोहे के हाथों से इस उपद्रव को मिटाया। फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी. ख़िलाफ़त के पद पर सुशोभित हुए उस अवसर पर भी पाखंडियों ने जमाअत में विघ्न डालने का प्रयास किया परन्तु अल्लाह तआला ने मोमिनों की जमाअत को एक हाथ पर जमा कर दिया तथा विरोधी असफल एवं निराश हो गए। आप रज़ी. के निधन के पश्चात तीसरी ख़िलाफ़त का दौर शुरु हुआ तथा उसके बाद चौथी ख़िलाफ़त का दौर शुरु हुआ।

तत्पश्चात हुज़ूरे अनवर ने उच्च स्तरीय विनय एवं नि:स्वार्थ को प्रकट करते हुए फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे इस स्तर पर सुशोभित करके हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए हुए वादे के अनुसार जमाअत को उन्नति के रास्ते पर चला दिया। दुशमन ने मतभेद पैदा करने की बड़ी कोशिशें कीं, अहमदियों को शहीद किया गया, सांसारिक लोभ दिए गए परन्तु अल्लाह तआला दुनिया भर के अहमदियों को ईमान एवं विवेक में बढ़ाता चला गया।

अहमदियों का ख़िलाफ़त के साथ जो सम्बंध है वह केवल एवं केवल अल्लाह तआला ही पैदा कर सकता है, किसी मनुष्य में यह सामर्थ्य नहीं है कि ऐसी मुहब्बत तथा निष्ठा का सम्बंध पैदा करे जो जमाअत के लोगों को ख़िलाफ़त से है तथा ख़लीफ़ा ए वक़्त को जमाअत के साथ है। मैं जिस देश में भी जाता हूँ वहाँ ये दृश्य दिखाई देते हैं और ये केवल कहने की बातें नहीं हैं बल्कि आजकल तो कैमरे की आँख उनको सुरक्षित कर लेती है। एम टी ए ये दृश्य दिखाती रहती है तथा इनको देख कर विरोधी भी यह कहने पर विवश हैं कि अल्लाह तआला की क्रियाशील शहादत तुम्हारे साथ है और फिर हज़ारों पत्र जो मुझे आते हैं, ख़िलाफ़त से निष्ठा एवं श्रद्धा को प्रकट करते हैं। अल्लाह तआला कैसे स्वयं लोगों को ख़िलाफ़त से जोड़ता है तथा किस तरह उनके दिलों में ख़िलाफ़त से प्रेम पैदा कर देता है, कुछ पत्रों के नमूने आपके सामने रखता हूँ।

तंज़ानिय: के एक मुअल्लिम लिखते हैं कि एक दिन फ़ज्र की नमाज़ के बाद मस्जिद की सीढ़ियों पर एक महिला को देखा, जिसने बताया कि वह दुआ कराने आई है जैसा कि गैर-अहमदियों में दम दरूद का रिवाज है। अतएव हमने उसे जमाअत की शिक्षा से अवगत किया तथा दुआ भी कराई।

उस महिला ने बताया कि मुझे सपने आते हैं जिसमें एक लम्बी दाढ़ी वाले व्यक्ति मुझे दीन समझाते हैं। जिस पर उसको अहमदिया जमाअत का परिचय कराया गया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तथा ख़लीफ़ाओं के चित्र दिखाए गए। उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चित्र देख कर कहा कि यही बुज़ुर्ग मेरे सपने में आते हैं।

इन्डोनेशिया के एक क्षेत्र में रहने वाले अब्दुल्लाह साहब का जमाअत के साथ सम्पर्क था तथा हमारी मिश्नरी के निकट होने के कारण विरोधियों ने उन पर आरोप लगाए तथा अपनी मस्जिद में आने से मना कर दिया। उन्होंने सपने में देखा कि ऐसे भंवर में फ़स गया हूँ जो विनाश कर देगा। तत्पश्चात उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चित्र को देख कर बताया कि एक बुज़ुर्ग ने ही मुझे उस भंवर से बचाया था। उनके बेटे ने भी सपना देखा था और बाद में ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रह, ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. तथा मेरे चित्र को देख कर बताया कि मुझे इन लोगों ने ही बचाया था। अब्दुल्लाह साहब ने अपने परिवार के साथ बैअत कर ली थी।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- माली की एक महिला अहमदी होने से पहले सपने में दो आवाज़ें सुनती थीं, एक तिलावत की तथा दूसरी वहाँ के मुअल्लिम की आवाज़। जमाअत के रेडियो पर मेरे सम्बोधन तथा अन्य प्रोग्राम सुने तो कहा कि यही आवाज़ें हैं जो मैं सुनती थी, फिर उसने बैअत कर ली।

कैमरोन के एक युवा कहते हैं कि कुछ वर्ष पूर्व दो बुज़ुर्गों को सपने में देखा। कुछ दिनों के बाद बाज़ार में एक युवा को जमाअत के पम्फ़लैट बांटते हुए देखा तो उस पम्फ़लैट में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चित्र था, जो सपने में देखा था। जमाअत से सम्पर्क किया, लिट्रेचर पढ़ा तो दूसरा चित्र भी मुझे दिखाई दे गया जो वर्तमान ख़लीफ़ा का था जिन्होंने मुझे सपने में नमाज़ पढ़ाने के लिए कहा था। मेरे अहमदियत क़बूल करने के बाद उस इलाक़े के चीफ़ का देहान्त हुआ तो मुझे उस इलाक़े का चीफ़ बना दिया गया। कहते हैं- ये सारी बरकत मुझे जमाअत में शामिल होने के कारण मिली है।

गिनी बसाव की एक महिला आयशा मारिया साहिबा के दो बेटों ने अहमदियत क़बूल की। उनके बड़े भाई जमाअत के विरोधी हैं तथा वही उनके परिवार को संभालते हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि अहमदियत नहीं छोड़ी तो मेरा तुमसे कोई सम्बंध नहीं रहेगा। बेटों ने कहा कि अल्लाह तआला की ज़ात काफ़ी है, हम अहमदियत नहीं छोड़ेंगे। दो दिन बाद सपने में सफ़ेद वस्त्र पहने हुए सफ़ेद दाढ़ी वाले ने सांत्वना दी कि चिंता मत करो, तुम्हारे बेटे सबसे ऊपर रहेंगे। सुबह होते ही मिश्नरी के पास गईं और मेरा चित्र देख कर कहा कि यही बुज़ुर्ग थे। बैअत करने के बाद अत्यंत कर्मठ अहमदी महिला हैं।

कीनिया के एक इलाक़े भाटी में ईसाइयों का संख्या अधिक है। एक दिन जमाअत के साथ विरोधी व्यवहार रखने वाले मुहम्मद अब्दी नामक व्यक्ति हमारे सैन्टर में नमाज़ के लिए आया, जमाअत का परिचय कराया गया। कुछ दिन बाद मुअल्लिम साहब के निवास पर आया तो एम टी ए पर मेरा

ख़ुत्ब: लगा हुआ था। ख़ुत्ब: पूरा होने के बाद बैअत करने के लिए कहने लगा। इसका कारण पूछा तो बाताया कि पिछली रात आँख खुलने पर आंगन में निकला तो आकाश में रौशन चीज़ देखी जिसका मुझ पर गहरा प्रभाव एवं रौब था। यह ख़ुत्ब: देख कर रात वाला चित्र पूरा हो गया, पूरे परिवार सहित जमाअत में दाखिल हो गया। सीरालियोन से इब्राहीम नामक एक व्यक्ति ने एम टी ए पर मेरे ख़ुत्बे सुने तथा खुलेआम कहने लग गया कि मौलवियों की शिक्षा झूठी है। मैंने स्वयं सुना है इमाम जमाअते अहमदिया अपने ख़ुत्ब: में क़ुर्आन करीम और हदीसों से हवाले बयान करते हैं, इनका कलमा भी वही है, इस लिए अहमदिया जमाअत झूठी नहीं हो सकती और उसने अहमदियत क़बूल कर ली।

कांगो कंशासा में एक व्यक्ति अहमद साहब ने अपने आठ लोगों के परिवार के साथ बैअत की और तबलीग भी शुरु की जिसके परिणाम स्वरूप ६२ लोग अहमदी हो गए। ख़लीफ़ा ए वक़्त तथा ख़िलाफ़त का निज़ाम इनके अहमदी होने का बड़ा कारण बना, इसके बाद इनकी तबलीग से भी काफ़ी जमाअत बढ़ी।

अमीर साहब कांगो कंशासा लिखते हैं कि कांगो में जमाअती रेडियों स्टेशन के अतिरिक्त २३ विभिन्न रेडियो सैन्टजरू पर तबलीगी, तर्बियती प्रोग्राम एंव ख़ुत्ब: जुम्अ: प्रसारित किया जाता है। एक स्थानीय ईसाई डाक्टर ने कहा कि मैं नियमद्ध रूप से ख़ुत्ब: सुनता हूँ तथा मेरा निवेदन है कि स्थानीय भाषा में इसका अनुवाद किया करें ताकि अधिक से अधिक लोग इससे लाभान्वित हों। अल्लाह तआला इस प्रकार इस्लाम और अहमदियत के पै$गाम पहुंचाने की व्यवस्था फ़रमा रहा है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने ट्रेनिडाड, किर्गस्तान, पैरागोए तथा बंगला देश के भी वृत्तांत बयान करके फ़रमाया कि एक समय पर इनके सीने भी खुलेंगे और ये अहमदियत को भी पहचान लेंगे, ख़िलाफ़त की बरकतें जारी रहेंगी।

ये घटनाएँ अहमदिया ख़िलाफ़त के लिए अल्लाह तआला के समर्थन और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुलामी में आकर दुनिया को जो एक संयुक्त उम्मत बनाना था, उसकी सच्चाई का प्रमाण हैं। विपरीत परिस्थितियों के बावजूद केवल अहमदिया ख़िलाफ़त ही पूरे विश्व में इस्लाम की उन्नति एवं तबलीग का काम कर रही है जो अल्लाह तआला की क्रि या शील शहादत का प्रमाण है।

अल्लाह तआला के वादे और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशगोई के अनुसार ख़िलाफ़त अला मिन्हाजुन्नबुव्व: क़यामत तक चलेगी, सदैव क़ायम रहेगी तथा कोई शत्रु इसका बाल भी बांका नहीं कर सकता। अत: अपने ईमानों में ज्वाला पैदा करें, अपने आपको ख़िलाफ़त से जोड़े रखें तथा इसके लिए किसी क़ुर्बानी से पीछे न हटें, अल्लाह तआला इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131

☆ ☆ ☆

अरबईन नम्बर-2

संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमात, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी की कलम से

अनुवादक : इब्नुल मेहदी लईक एम ए

हे प्रिय सज्जनो ! तुम ने वह समय पाया है कि जिसकी ख़ुशख़बरी समस्त नबियों ने दी है और उस व्यक्ति को अर्थात् मसीह मौऊद को तुम ने देख लिया जिसे देखने के लिए बहुत से पैग़म्बरों ने भी इच्छा की थी। इसलिए अब अपने ईमानों को भली-भांति दृढ़ करो और अपने मार्ग ठीक करो, अपने हृदयों को शुद्ध करो, अपने स्वामी को प्रसन्न करो। मित्रो !! तुम इस यात्री निवास में केवल कुछ दिनों के लिए हो। अपने असली घरों को स्मरण करो। तुम देखते हो कि प्रति वर्ष कोई न कोई मित्र तुम से विदाई लेता है। इसी प्रकार तुम भी किसी वर्ष अपने मित्रों को जुदाई का दाग़ दे जाओगे। अत: सावधान हो जाओ और इस अंधकारमय युग का विष तुम पर प्रभाव न डाले, अपनी नैतिक अवस्थाओं को बहुत शुद्ध करो, द्वेष, जलन और अभिमान से पवित्र हो जाओ, नैतिक चमत्कारों के संसार के समक्ष प्रदर्शन करो। तुम सुन चुके हो कि हमारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के दो नाम हैं। (1) एक मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और यह नाम तौरात में लिखा गया है जो एक शरीअत है जैसा कि इस आयत से प्रकट होता है-

مُّحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوهِهِم مِّنْ أَثَرِ السُّجُودِ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَاةِ (अलफ़तह : 30)

(2) दूसरा नाम अहमद है (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और यह नाम इंजील में है जो एक सौन्दर्य पूर्व रूप में ख़ुदाई शिक्षा है। जैसा कि इस आयत से स्पष्ट होता है-

وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَّأْتِيْ مِن بَعْدِي اسْمُهٗٓ أَحْمَدُ (अस्सफ़ : 7)

और हमारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) प्रताप और सौन्दर्य दोनों के संग्रहीता थे। मक्का का जीवन जमाली रंग में था तथा मदीना का जीवन जलाली (प्रतापी) रंग में फिर ये दोनों विशषताएं उम्मत के लिए इस प्रकार से बांटी गईं कि[रज़ि] को जलाली रंग का जीवन प्रदान किया गया और जमाली रंग के जीवन के लिए मसीह मौऊद को आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का मज़हर ठहराया। यही कारण है कि उसके पक्ष में फ़रमाया गया कि يَضَعُ الْحَرْبَ अर्थात्[1]★ लड़ाई नहीं करेगा और यह ख़ुदा तआला का क़ुर्आन करीम में वादा था कि इस भाग को पूरा करन के लिए मसीह मौऊद और उसकी जमाअत को प्रकट किया जाएगा। जैसा कि आयत اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (अलजुम्अ : 4) में इसी की

★ जिहाद अर्थात् धार्मिक लड़ाइयों की तीव्रता को ख़ुदा तआला शनै: शनै: कम करता गया है। हज़रत मूसा के समय इतनी कठोरता थी कि ईमान लाना भी क़त्ल से बचा नहीं सकता था तथा दूध पीते बच्चे भी क़त्ल किए जाते थे फिर हमारे नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के समय में बच्चों, बूढ़ों तथा स्त्रियों का क़त्ल अवैध किया गया और फिर कुछ जातियों के लिए ईमान की बजाए केवल ज़िज़िया (कर) दे कर गिरफ़्त से मुक्ति पाना स्वीकार किया गया। फिर मसीह मौऊद के समय जिहाद का आदेश बिल्कुल स्थगित कर दिया गया। इसी से।

ओर संकेत है और आयत تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا (मुहम्मद : 5) भी यही संकेत कर रही है। अत: सावधान होकर सुनो कि तेरह सौ वर्ष के पश्चात् जमाली रंग के जीवन का नमूना दिखाने के लिए तुम्हें पैदा किया गया।*[2] यह ख़ुदा की परीक्षा है। वह तुम्हें परखता है कि तुम उस नमूने को दिखाने में कैसे हो। तुम से पूर्व सहाबा[रज़ि.] ने जलाली (प्रतापी) जीवन का प्रशंसनीय नमूना दिखाया और वह ऐसा ही समय था कि जलाली (प्रतापी रंग के जीवन का नमूना दिखाया जाता, क्योंकि ईमानदार लोग मूर्तियों के सम्मान के लिए तथा सृष्टि-पूजा के समर्थन में भेड़-बकरी के समान क़त्ल किए जाते थे, तथा पत्थरों, सितारों, तत्वों तथा दूसरी सृष्टि को ख़ुदा का स्थान दिया था। अत: वह युग नि:संदेह जिहाद का युग था ताकि जो लोग अत्याचार एवं अन्याय से तलवार उठाते हैं वे तलवार ही से क़त्ल किए जाएं। अत: सहाबा[रज़ि.] ने तलवार उठाने वालों को तलवार ही से ख़ामोश किया और मुहम्मद का नाम जो अपने अन्दर प्रताप, तेज और प्रियतम की शान रखता है उसकी झलक प्रकट करने के लिए ख़ूब पराक्रम दिखाए तथा धर्म के समर्थन में अपने रक्त बहा दिए। तत्पश्चात् वह महा झूठे पैदा हुए जो मुहम्मद के नाम पर प्रताप प्रकट करने वाले नहीं थे वरन् उनके अधिकतर लोग चोरों और डाकुओं की भांति थे, जो मुझ से पूर्व गुज़र गए तथा झूठे तौर पर मुहम्मदी कहलाते थे और लोग उनको स्वार्थी समझते थे जैसा कि आजकल भी कुछ सीमावर्ती मूर्ख इस प्रकार के मौलवियों की शिक्षा से धोखा खा कर मुहम्मदी प्रताप के प्रकट करने के बहाने से लूट-मार अपना नियम बनाते हैं और प्रतिदिन अकारण के ख़ून (वध) करते हैं परन्तु तुम ध्यानपूर्वक सुन लो कि अब मुहम्मद नाम की झलक प्रकट करने का समय नहीं अर्थात् अब जलाली रंग की कोई सेवा शेष नहीं क्योंकि उचित सीमा तक वह जलाल प्रकट हो चुका। सूर्य की किरणों की अब

2* ज्ञान और अध्यात्म ज्ञान भी जमाली रंग में सम्मिलित हैं और क़ुर्आन करीम की आयत لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ (अस्सफ़्फ़ : 10) में वादा था कि ये ज्ञान तथा अध्यात्म ज्ञान मसीह मौऊद को पूर्ण रूपेण दिए जाएंगे क्योंकि समस्त धर्मों पर विजयी होने का माध्यम ख़ुदाई ज्ञान सच्चे अध्यात्म ज्ञान, स्पष्ट तर्क तथा प्रभुत्वशाली निशान हैं तथा धर्म का प्रभुत्व उन्हीं पर निर्भर है। इसी की ओर संकेत है कि जो कहा गया कि उन दिनों मैं बैतुल्लाह के नीचे एक बड़ा ख़ज़ाना निकलेगा अर्थात् बैतुल्लाह के लिए जो ख़ुदा का स्वाभिमान है वह मांग करेगा कि बैतुल्लाह से अध्यात्मिक ज्ञान और आकाशीय ख़ज़ाने प्रकट हों अर्थात् जब विरोधियों के अत्याचारपूर्ण आक्रमण बैतुल्लाह के सम्मान को ध्वस्त करना चाहेंगे तो उसका परिणाम यह होगा कि उसके नीचे से एक भारी ख़ज़ाना निकल आएगा जो अध्यात्म ज्ञानों का ख़ज़ाना होगा और यह बैतुल्लाह पर निर्भर नहीं अपितु क़ुर्आन के प्रत्येक ऐसे वाक्य के नीचे एक ख़ज़ाना है जिसे काफ़िरों के हाथ विरोधात्मक आक्रमण से ध्वस्त करके झूठे तौर पर दिखाना चाहते हैं। कोई मुसलमान न बैतुल्लाह को गिराएगा और न क़ुर्आनी इमारत को गिराना चाहेगा अपितु हदीस के विषय के अनुसार काफ़िर लोग उस इमारत को गिरा रहे हैं और उसके नीचे से ख़ज़ाने निकल रहे हैं। मैं काफ़िर को भी इस कारण मित्र रखता हूँ कि उनके माध्यम से बैतुल्लाह तथा किताबुल्लाह के गुप्त ख़ज़ाने हमें मिल रहे हैं तथा इस अर्थों को स्थापित रखकर यहां एक और अर्थ भी हैं और वह ये हैं कि ख़ुदा ने अपने इल्हामों में मेरा नाम बैतुल्लाह भी रखा है। यह इस बात की ओर संकेत है कि विरोधीजन इस बैतुल्लाह को जितना गिराना चाहेंगे उसमें से अध्यात्म ज्ञान तथा आकाशीय निशानों के ख़जाने निकलेंगे। अत: मैं देखता हूँ कि प्रत्येक कष्ट के समय एक ख़ज़ाना अवश्य निकलता है तथा इस बारे में इल्हाम यह है- यके पाए मन मी बोसीद व मन मे गुफ़्तम कि हजरे अस्वद मिनम। इसी से

बर्दाश्त नहीं। अब चन्द्रमा के शीतल प्रकाश की आवश्यकता है और वह अहमद के रंग में होकर मैं हूँ। अब अहमद के नाम का नमूना प्रकट करने का समय है अर्थात् जमाली रंग की सेवाओं के दिन हैं तथा नैतिक कौशलों के प्रकट करने का युग है। हमारे नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) मूसा के मसील थे और मसीले ईसा भी। मूसा जलाली रंग में आया था तथा उस पर जलाल और ख़ुदाई प्रकोप का रंग का प्रभुत्व था परन्तु ईसा जमाली रंग में आया था और उस पर विनय का प्रभुत्व था। अत: हमारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने अपने मक्का और मदीना के जीवन में ये दोनों नमूने जलाल और जमाल के प्रकट कर दिए और फिर चाहा कि आप[स.] के पश्चात् आपकी वरदान प्राप्त जमाअत भी आपकी अध्यात्मिक उत्तराधिकारी है उन्हीं दोनों नमूनों को प्रकट करे। अत: आप[स.] ने मुहम्मदी अर्थात् जलाली नमूना दिखाने के लिए सहाबा[रज़ि.] को नियुक्त किया, क्योंकि उस युग में इस्लाम की पीड़ित अवस्था के लिए यही उपचार नीतिगत था। फिर जब वह युग जाता रहा और पृथ्वी पर कोई व्यक्ति ऐसा न रहा कि धर्म के लिए इस्लाम पर ज़बरदस्ती करे। इसलिए ख़ुदा ने जलाली रंग को निरस्त करके अहमद नाम का नमूना प्रकट करना चाहा अर्थात् जमाली रंग दिखाना चाहा। अत: उसने अनादि वादे के अनुसार अपने मसीह मौऊद को पैदा किया जो ईसा का अवतार और अहमदी रंग में होकर जमाली शिष्टाचार का प्रकट करने वाला है और ख़ुदा ने तुम्हें इस अहमद की विशेषता रखने वाले ईसा के लिए बतौर अंगों के बनाया। अत: अब समय है कि अपनी नैतिक शक्तियों का सौन्दर्य और सुन्दरता दिखाओ। चाहिए कि तुम में ख़ुदा की प्रजा के लिए सामान्य सहानुभूति हो और कोई छल-कपट तुम्हारे स्वभआव में न हो तुम अहमद नाम के मज़हर हो। अत: चाहिए कि दिन-रात ख़ुदा की स्तुति और प्रशंसा तुम्हारा कार्य हो और सेवकों के समान अवस्था जो प्रशंसक होने के लिए अनिवार्य है अपने अन्दर पैदा करो और तुम पूर्ण रूप से ख़ुदा की प्रशंसा किस प्रकार कर सकते हो जब तक तुम उसे समस्त लोकों का प्रतिपालक अर्थात् समस्त संसार का पालने वाला न समझो और तुम क्योंकर इस इक़रार में सच्चे ठहर सकते हो जब तक स्वयं को ऐसा ही न बनाओ, क्योंकि यदि तू किसी सद्गुण व्यक्ति के साथ किसी की प्रशंसा करता है और स्वयं उस गुण के विपरीत आस्था और आचरण रखता है तो जैसे तू उस व्यक्ति से उपहास करता है कि जो स्वयं के लिए पसन्द नहीं करता उसके लिए वैध रखता है और जबकि तुम्हारा रब्ब जिस ने अपने कलाम को रब्बुल आलमीन (सब लोकों को प्रतिपालक) से आरम्भ किया है पृथ्वी की समस्त खाने और पीने योग्य वस्तुएं और अन्तरिक्ष की समस्त वायु, आकाश के सितारों, अपने सूर्य और चन्द्रमा से समस्त अच्छे और बुरे को लाभ पहुँचाता है तो तुम्हारा कर्त्तव्य होना चाहिए कि यही सदाचार तुम में भी हो अन्यथा तुम अहमद और हामिद (प्रशंसक) नहीं कहला सकते, क्योंकि अहमद तो उसे कहते हैं जो ख़ुदा की प्रशंसा करने वाला हो और जो व्यक्ति किसी की बहुत प्रशंसा करता है वह अपने लिए वही सदाचार पसन्द करता है जो उसमें हैं और चाहता है कि वे सदाचार उस में हों। अत: तुम क्योंकर सच्चे अहमद या हामिद हो सकते हो जब कि इस सदाचार को अपने लिए पसन्द नहीं करते। वास्तव में अहमदी बन जाओ और निश्चय ही समझो कि ख़ुदा की मूल नैतिक विशेषताएं चार ही हैं जिनका सूरह फ़ातिहा में उल्लेख है

(1) सब का प्रतिपालक (रब्बुल आलमीन)

(2) रहमान- किसी की सेवा के बदले के बिना कृपा करने वाला

(3) रहीम- किसी सेवा पर हक़ से अधिक ईनाम और सम्मान करने और सेवा को स्वीकार करने वाला और नष्ट न करने वाला।

(4) अपने बन्दों की अदालत करने वाला। अत: अहमद वह है जो इन चारों विशेषताओं को प्रतिबिम्ब स्वरूप अपने अन्दर एकत्र कर ले। यही कारण है कि अहमद का नाम सुन्दरता को प्रकट करने वाला तथा इसके मुक़ाबले पर मुहम्मद का नाम जलाल (प्रताप एवं तेज) का प्रकट करने वाला है। कारण यह है कि मुहम्मद के नाम में प्रियतम होने का रहस्य है क्योंकि कीर्तियों का संग्रहीता है तथा पूर्ण स्तर की सुन्दरता तथा कीर्तियों का संग्रहीता होना जलाल (प्रताप) को चाहता है परन्तु अहमद नाम में प्रेमी का रहस्य है क्योंकि प्रशंसक होने के लिए विनय और प्रेमरूपी विनम्रता और ख़ाकसारी अनिवार्य है। इसी का नाम जमाली अवस्था है। यह अवस्था विनम्रता को चाहती है। हमारे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) में प्रियतम होने की शान भी थी जिसकी मुहम्मद नाम मांग करता है क्योंकि मुहम्मद होना अर्थात् सम्पूर्ण कीर्तियों एवं गुण समूहों का संग्रहीता होना प्रियतम होने की शान पैदा करता है और आप[स.] में प्रेमी की शान भी थी जिसकी अहमद का नाम मांग करता है क्योंकि प्रशंसक के लिए प्रेमी होना आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति किसी की सच्ची और पूर्ण प्रशंसा तभी करता है जब कि उसका प्रेमी हो और आशिक़ और प्रेमी होने के लिए विनम्रता अनिवार्य है और यही जमाली अवस्था है जो अहमदियत की वास्तविकता के लिए अनिवार्य है। प्रियतमता जो मुहम्मद के नाम में गुप्त थी, सहाबा के द्वारा प्रकट हुई और जो लोग अपमान करने वाले और गर्दन काटने वाले थे ख़ुदा के प्रिय होने के प्रताप (जलाल) ने उनका दमन किया परन्तु अहमद नाम में प्रेमी होने की शान थी अर्थात् प्रेमियों जैसी विनय और ख़ाकसारी। यह शान मसीह मौऊद के द्वारा प्रकट हुई। अत: तुम अहमदियत की शान के प्रकट करने वाले हो, इसलिए अपनी प्रत्येक अनुचित उत्तेजना पर मौत ले आओ तथा प्रेमियो के समान विनय दिखाओ। ख़ुदा तुम्हारे साथ हो आमीन।

जल्दबाज़ आलोचकों के लिए संक्षिप्त लेख और बराहीन अहमदिया की चर्चा

चूंकि यह भी अल्लाह की सुन्नत (नियम) है कि प्रत्येक व्यक्ति जो ख़ुदा की ओर से आता है बहुत से अदूरदर्शी, ख़ुदा से न डरने वाले उस की व्यक्तिगत बातों में हस्तक्षेप करके भिन्न-भिन्न प्रकार की आलोचनाएं किया करते हैं। कभी उसे झूठा ठहराते हैं, कभी उसे प्रतिज्ञा भंग करने वाला ठहराते हैं और कभी उसे लोगों के अधिकारों को नष्ट करने वाला और दूसरों का माल खाने वाला, बेईमान, और ग़बन करने वाला कहते हैं, कभी उसका नाम विषय लोलुप रखते हैं और कभी उसे भोग-विलास प्रिय

तथा अच्छे खाने और अच्छे पहनने का रसिया की संज्ञा देते हैं और कभी मूर्ख कह कर पुकारते हैं[3]★ और कभी उसे इन गुणों से प्रसिद्ध करते हैं कि वह एक आत्मपूजक, अहंकारी, और दुष्ट है, लोगों को गालियां देने वाला अपने विरोधियों को अपशब्द कहने वाला, कृपण, धन-पिशाच, बहुत झूठा, धोखेबाज़ बेईमान हत्यारा है। ये सब उपाधियां उन लोगों की ओर से ख़ुदा के नबियों और मामूरों को मिलती हैं जो दुराचारी और हृदय के अंधे होते हैं। अत: हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में भी यही आपत्तियां अधिकांश दुष्ट स्वभआव रखने वाले लोगों की हैं कि उसने अपनी जाति के लोगों को प्रेरणा दी ताकि वे मिस्त्रियों के सोने-चांदी के बर्तन और आभूषण और बहुमूल्य कपड़े अस्थाई तौर पर मांगे और मात्र

3★ खेद कि ज्ञान संबंधी निशान के मुक़ाबले में मूर्ख लोगों ने पीर महर अली शाह गोलड़वी के बारे में अकारण झूठी विजय का नगाड़ा बजा दिया और मुझे गन्दी गालियां दीं और मुझे उसके मुक़ाबले पर मूर्ख और अनाड़ी ठहराया जैसे मैं उस के रोब के नीचे आकर डर गया अन्यथा वह हज़रत तो सच्चे हृदय से मुक़ाबले पर अरबी तफ़्सीर लिखने के लिए तैयार हो गए थे और इसी नीयत से लाहौर पधारे थे परन्तु मैं आप की तेजस्वी शान और ज्ञान संबंधी प्रतिष्ठा को देख कर भाग गया। हे आकाश झूठों पर ला'नत कर। आमीन। प्रिय दर्शकगण! झूठे को अपमानित करने के लिए इसी समय जो 7 दिसम्बर 1900 ई. दिन जुमा है ख़ुदा ने मेरे हृदय में एक बात डाली है और मैं ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूँ जिस का नरक झूठों के लिए भड़क रहा है कि मैंने सख़्त झुठलाने को देखकर स्वयं इस अद्भुत मुक़ाबले के लिए निवेदन किया था और यदि पीर मेहर शाह साहिब मनक़ूली मुबाहसा और उसके साथ बैअत की शर्त प्रस्तुत न करते जिस से मेरा उद्देश्य पूर्णतया समाप्त हो गया था तो यदि लाहौर और क़ादियान में बर्फ़ के पर्वत भी होते और जाड़े के दिन होते तो मैं तब भी लाहौर पहुचता और उन्हें दिखाता कि आसमानी निशान इसे कहते हैं परन्तु उन्होंने मनक़ूली मुबाहसा और फिर बैअत की शर्त लगाकर अपनी जान बचाई और इस गन्दी चाल को प्रस्तुत करके अपने सम्मान की परवाह न की, परन्तु यदि पीर साहिब वास्तव में सुबोध अरबी तफ़्सीर पर समर्थ हैं और उन्होंने कोई छल नहीं किया तो अब भी वही शक्ति उनमें अवश्य मौजूद होगी। अत: मैं उनको ख़ुदा तआला की क़सम देता हूँ कि उसी मेरे निवेदन को इस रंग में पूरा कर दें कि मेरे दावों के झुठलाने के बारे में सरस-सुबोध अरबी में सूरह फ़ातिहा की एक तफ़्सीर लिखें जो चार भाग से कम न हो और मैं उसी सूरह की तफ़्सीर ख़ुदा की कृपा और उसकी शक्ति से अपने दावे को सिद्ध करने के सम्बन्ध में सरस-सुबोध अरबी में लिखूंगा। उन्हें अनुमति है कि वह इस तफ़्सीर में समस्त संसार के उलेमा से सहायता ले लें, अरब के पारंगत और अभयस्त विद्वानों को बुला लें, लाहौर और अन्य स्थानों के अरबी जानने वाले प्रोफ़ेसरों को भी सहायता के लिए बुला दें। 15 दिसम्बर 1900 ई. से सत्तर दिन तक इस कार्य के लिए हम दोनों को अवकाश है, एक दिन भी अधिक न होगा। यदि मुक़ाबले पर तफ़्सीर लिखने के पश्चात् अरब के तीन सुविख्यात साहित्यकार उनकी तफ़्सीर को सरस और सुबोध शैली के साधनों से सम्पन्न ठहरा दें तथा अध्यात्मज्ञानों से भरपूर समझें तो मैं पांच सौ रुपया नक़द उनको दूंगा और अपनी समस्त पुस्तकें जल दूंगा और उनके हाथ पर बैअत कर लूंगा और यदि मामला इसके विपरीत निकला या उस अवधि तक अर्थात् सत्तर दिन तक वह कुछ भी लिख न सके तो मुझे ऐसे लोगों से बैअत की भी आवश्यकता नहीं और न रुपयों की इच्छा। केवल यही दिखाऊंगा कि कैसे उन्होंने पीर कहलाकर लज्जाजनक झूठ बोला और कैसे सरासर अन्याय, नीचता और बेईमानी से कुछ अख़बार वालों ने अपने अख़बारों में उन की सहायता की। मैं इस कार्य को ख़ुदा ने चाहा तुहफ़ा गोलड़विया को पूर्ण करने के बाद आरम्भ कर दूंगा। और जो वयक्ति हम में से सच्चा है वह कदापि लज्जित नहीं होगा। अब समय हैकि अख़बारों वाले जिन्होंने बिना देखे उनका समर्थन किया था उन्हें इस कार्य के लिए उठाएं। यह बात सत्तर दिन में सम्मिलित है कि दोनों सदस्यों की पुस्तकें प्रकाशित होकर आ जाएं। इसी से।

झूठ बोलते हुए कहें कि हम इबादत (उपासना) के लिए जाते हैं। कुछ दिन तक तुम्हारी ये वस्तुएं वापस लाकर दे देंगे और हृदय में कपट था। अन्ततः प्रतिज्ञा भंग की और झूठ बोला और दूसरों का माल अपने अधिकार में ले कर किनआन की ओर भाग गए। वास्तव में ये समस्त आरोप ऐसे हैं कि यदि बौद्धिक तौर पर इनका उत्तर दिया जाए तो बहुत से मूर्ख और निकृष्ट स्वभाव वाले इन उत्तरों से सन्तोष नहीं पा सकते। इसलिए ख़ुदा तआला का नियम ऐसे आलोचना करने वालों के उत्तर में यही है कि जो लोग उसकी ओर से आते हैं बड़े अद्भुत तौर पर उनका समर्थन करता है और निरन्तर आकाशीय निशान दिखाता है यहाँ तक कि मनीषी लोगों को अपनी ग़लती को स्वीकार करना पड़ता है और वे समझ लेते हैं कि यदि यह व्यक्ति झूठा और दोषी होता तो उसका इतना समर्थन क्यों होता, क्योंकि संभव नहीं कि ख़ुदा एक झूठ बांधने वाले से ऐसा प्रेम करे जैसा कि वह अपने सच्चे मित्रों से करता रहा है। इसी की ओर अल्लाह तआला इस आयत में संकेत फ़रमाता है-

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا۔ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ

अर्थात् हम ने एक महान विजय जो हमारी ओर से एक बहुत बड़ा निशान है तुझे प्रदान की है तथापि वे समस्त पाप जो तेरी ओर सम्बद्ध किए जाते हैं उन पर इस स्पष्ट विजय की प्रकाशमय चादर डाल कर आलोचकों का दोषी होना सिद्ध करूँ। अतः अनादिकाल से और जब से अंबिया का सिलसिला आरम्भ हुआ है अल्लाह का नियम यही है कि वह हज़ारों आलोचनाओं का एक ही उत्तर दे देता है अर्थात् समर्थन वाले निशानों द्वारा सानिध्य प्राप्त होना सिद्ध कर देता है। तब जैसे प्रकाश के निकलने और सूर्य के उदय होने से अचानक अंधकार दूर हो जाता है। इसी प्रकार समस्त आरोप टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। अतः मैं देखता हूँ कि मेरी ओर से भी ख़ुदा यही उत्तर दे रहा। यदि मैं वास्तव में झूठा, दुराचारी, बेईमान और असत्यवादी था तो फिर मेरे मुक़ाबले से इन लोगों की जान क्यों निकलती है। बात आसान थी[4]★ किसी आकाशीय निशान के द्वारा मेरा और अपना फ़ैसला

4★मैं इस स्थान तक पहुंचा था कि मुन्शी इलाही बख़्श एकाउन्टेन्ट की पुस्तक असा-ए-मूसा मुझे प्राप्त हुई जिसमें मेरी व्यक्तिगत बातों के बारे में मात्र दुर्भावना से तथा ख़ुदा की कुछ अच्छी और पवित्र भविष्यवाणियों पर सरासर जल्दबाज़ी से प्रहार किए गए हैं। वह पुस्तक जब मैंने हाथ से छोड़ी तो थोड़ी देर के बाद मुंशी इलाही बख़्श साहिब के बारे में इल्हाम हुआ- يريدون ان يرواطمئك والله يريد ان يريك انعامه۔ الانعامات المتواترة انت منى بمنزلة اولادى۔ الله وليك وربّك۔ فقلنا ياناركونى بردا۔ ان الله مع الذين اتقوا والذين هم يحسنون الحسنٰى۔ अनुवाद- ये लोग अपवित्रता तथा दुष्टता की खोज में हैं और ख़ुदा चाहता है कि अपनी निरन्तर ने'मतें जो तुझ पर हैं दिखो और स्त्री के मासिक धर्म के रक्त से तुझे क्योंकर समानता हो और वह तुझ में कहाँ शेष हैं। पवित्र परिवर्तनों ने उस रक्त को सुन्दर लड़का बना दिया और वह लड़का जो उस रक्त से बना मेरे हाथ से पैदा हुआ। इसलिए तू मुझ से औलाद के स्थान पर है अर्थात् यद्यपि बच्चों का मांस और हड्डियां मासिक धर्म के रक्त से ही पैदा हुआ है परन्तु वह रक्त स्त्री के मासिक धर्म के रक्त की तरह अपवित्र नहीं कहला सकते। इसी प्रकार तू भी मनुष्य की स्वाभाविक अपवित्रता से जो मानव के लिए अनिवार्य है और स्त्री के मासिक धर्म के रक्त से समान है उन्नति कर गया। अब उस पवित्र लड़के में हैज़ के ख़ून की खोज करना मूर्खता है वह तो ख़ुदा के हाथ से पवित्र लड़का बन गया और उसके लिए औलाद के

ख़ुदा पर छोड़ देते और फिर ख़ुदा की कृपा को एक हकम के कार्य के तौर पर स्वीकार कर लेते, परन्तु इन लोगों को तो इस प्रकार के मुक़ाबले का नाम सुनने से भी मौत आती है। महर अली शाह गोलड़वी को सच्चा मानना और यह समझ लेना कि वह विजयी होकर लाहौर से चला गया है। क्या यह इस बात का ठोस प्रमाण नहीं है कि इन लोगों के हृदय विकृत हो गए हैं। इन लोगों के हृदय साहस, चपलता और धृष्टता से मर गए हैं जैसे मरना नहीं है। यदि ईमान और लज्जा से काम लेते तो इस कार्यवाही से नफ़रत करते जो महर अली शाह गोलड़वी से मेरे मुक़ाबले पर की। क्या मैंने उसे इसलिए बुलाया था कि मैं उस से एक मन्क़ूली बहस करके बैअत कर लूँ। जिस अवस्था में

स्थान पर हो गया। ख़ुदा तेरा अभिभावक और तेरा पालने वाला है। इसलिए विशेष तौर पर समानता मध्य है। जिस अग्नि को इस पुस्तक असा-ए-मूसा से भड़काना चाहा है हमने उसे बुझा दिया है। ख़ुदा संयमियों के साथ हैं जो शुभ कार्यों को पूर्ण सुन्दरता के साथ अंजाम देते हैं और संयम के सूक्ष्म पहलुओं का ध्यान रखते हैं अर्थात् वे लोग जो पूरी जांच-पड़ताल के बिना आयत وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ का चरितार्थ बनाते हैं। ख़ुदा उनके साथ नहीं है तथा उनके लिए **ویل** अर्थात् नर्क का वादा है। खेद कि मुन्शी साहिब ने इन व्यर्थ आलोचनाओं से पूर्व इस आयत पर विचार नहीं किया, परन्तु अच्छा हुआ कि उन्होंने उनके इक़रार के अनुसार इस पिशुनता का ख़ुदा तआला से तुरन्त उत्तर भी पा लिया अर्थात् अनेकों बार उनको यह इल्हाम जो पुस्तक असा-ए-मूसा में लिखित है अर्थात् **انّی مهین لمن اراد اهانتك** अर्थात् मैं तुझे इस व्यक्ति की सहायता में अपमानित करूँगा जिनके बारे में तेरा विचार है कि वह मुझे अपमानित करना चाहता है अर्थात् यह विनीत। अब देखो यह कितना चमकता हुआ निशान है जिसने आयत وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ कि अविलम्ब पुष्टि कर दी। संसार के समस्त मौलवियों के पूछ लो कि इस इल्हाम के यही अर्थ हैं और **مهین** शब्द مهینک का स्थापन है और यह एक बड़ा निशान है। यदि मुंशी इलाही बख़्स साहिब ख़ुदा से डरें। अपमान के लिए मुंशी साहिब को दो ही मार्ग सूझे हैं (1) एक यह कि जितनी पुस्तकों का वादा किया था वे सब प्रकाशित नहीं कीं। यह न सोचा कि यदि कुछ विलम्ब हो गया तो क़ुर्आन करीम भी तो तेईस वर्ष में समाप्त हुआ। आपको बदनीयती पर क्योंकर ज्ञान हो गया मनुष्य ख़ुदा के प्रारब्ध के अधीन है तथा **وانّما الاعمال بالنیّات** जबकि यह भी बार-बार विज्ञापन दिया गया जिस जल्दबाज़ ने कुछ दिया है वह वापस ले ले तो फिर आरोप की क्या गुंजायश थी सिवाए मनोवृत्ति की दुष्टता के। (2) दूसरा आरोप यह है कि भविष्यवाणियां पूरी नहीं हुईं। इसका उत्तर तो यही है कि झूठों पर ख़ुदा की ला'नत। सौ से अधिक भविष्यवाणियां पूरी हो चुकीं। हज़ारों लोग गवाह हैं तथा आथम की भविष्यवाणी सशर्त थी, अपनी शर्त के अनुसार पूर्ण हुई। भला कहिए कि क्या वह इल्हाम सशर्त नहीं था। सच है इन्कार करना ला'नतियों का कार्य है यदि अपनी बुद्धि द्वारा परिणाम निकालने से हमारा यह भी विचार हो कि आथम निर्धारित समय के अन्दर मरेगा तो यह आरोप केवल इस अवस्था में हो सकता है कि पहले आप इस्लाम से विमुख हो जाएं क्योंकि आंहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की विवृत्ति भी हदीस **ذهب وهلی** की दृष्टि से ग़लत निकली। इसलिए इस ग़लती के कारण आप स. भी आप के नियम की दृष्टि से झूठे ठहरे। प्रथम इस प्रश्न का उत्तर दो फिर मुझ पर आपत्ति करो। इसी प्रकार अहमद बेग़ के दामाद के संबंध में भी सशर्त भविष्यवाणी है। यदि कुछ ईमान शेष है तो शर्त की क्यों प्रतीक्षा नहीं करते और यह ईमानदारी थी कि सारी पुस्तक में लेखराम के बारे में भविष्यवाणी की चर्चा तक नहीं की। क्या वह भविष्यवाणी पूरी हुई अथवा नहीं ? क्या अहमद बेग़ भविष्यवाणी के अनुसार निर्धारित समय सीमा के अन्दर मर गया अथवा नहीं ? अभी कल की बात है कि आप के आदरणीय मित्र डिप्टी फ़तह अली शाह साहिब ने मेरे पूछने पर बड़े विश्वास के साथ गवाही दी थी कि लेखराम के बारे में अत्यन्त सफ़ाई से भविष्यवाणी पूरी हो गई। अब इसी जमाअत में से होकर आप झुठलाने लगे। इसी से।

मैं बार-बार कहता हूँ कि ख़ुदा ने मुझे मसीह मौऊद नियुक्त करके भेजा है और मुझे बता दिया है कि अमुक हदीस सच्ची है और अमुक झूठी है और क़ुर्आन के सही अर्थों से मुझे परिचित कराया है तो फिर मैं किस बात में और किस उद्देश्य के लिए इन लोगों से मन्क़ूली बहस करूँ जबकि मुझे अपनी वह्यी पर ऐसा ही ईमान है जैसा कि तौरात, इन्जील और क़ुर्आन करीम पर तो क्या उन्हें मुझ से आशा हो सकती है कि उन के भ्रमों अपितु उनकी बनाई हुई बातों का भण्डार को सुनकर अपने विश्वास को छोड़ दूँ जिसकी नींव पूर्ण विश्वास पर है और वे लोग अपनी हठ को त्याग नहीं सकते, क्योंकि मेरे मुक़ाबले पर झूठी किताबें प्रकाशित कर चुके हैं और अब उनका लौटना मौत से अधिक कठिन है। ऐसी अवस्था में बहस से कौन सा लाभ हो सकता है। जिस अवस्था में मैंने विज्ञापन दे दिया कि भविष्य में किसी मौलवी इत्यादि से मन्क़ूली बहस नहीं करूँगा। अत: न्याय और नेक नीयत की मांग यह थी कि इन मन्क़ूली बहसों का मेरे सामने नाम भी न लेते। क्या मैं अपने वचन को भंग कर सकता था ?

फिर यदि महर अली शाह का हृदय ख़राब नहीं था तो उसने ऐसी बहस की मुझ से क्यों विनती की जिसे मैं दृढ़ संकल्प के साथ त्याग चुका था। इस विनती में लोगों को यह धोखा दिया कि जैसे वह मेरे निमंत्रण को स्वीकार करता है। देखो यह कैसे विचित्र कपट से काम लिया तथा अपने विज्ञापन में यह लिखा कि प्रथम मन्क़ूली बहस करो और यदि शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी तथा उसके दो मित्र क़सम खाकर कह दें कि सही आस्थाएं वही हैं जो महर अली शाह प्रस्तुत करता हैतो अविलम्ब उसी सभा में मेरी बैअत कर लो। अब देखो संसार में इस से अधिक भी कोई कपट होता है। मैंने तो उनको निशान देखने और निशान दिखाने के लिए बुलाया और यह कहा कि बतौर चमत्कार दोनों सदस्य क़ुर्आन करीम की किसी सूरह की अरबी में तफ़्सीर लिखें तथा जिसकी तफ़्सीर और अरबी इबारत सरसता और सुबोधता की दृष्टि से निशान की सीमा तक पहुंची हुई सिद्ध हो वही ख़ुदा की ओर से समर्थित समझा जाए और स्पष्ट लिख दिया कि कोई मन्क़ूली बहसें नहीं होंगी। केवल निशान देखने और दिखाने के लिए यह मुक़ाबला होगा, परन्तु पीर साहिब ने मेरे इस पूर्ण निमन्त्रण को समाप्त करके पुन: मन्क़ूली बहस की विनती कर दी और उसी को फ़ैसले का आधार ठहरा दिया और लिख दिया कि हमने आप का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया, केवल एक शर्त अधिक लगा दी। हे धोखेबाज़ ! ख़ुदा तुझ से हिसाब ले। तूने मेरी शर्त का क्या स्वीकार किया जबकि तेरी ओर से मन्क़ूली बहस पर बैअत का आधार हो गया जिसे मैं प्रकाशित संकल्प के कारण किसी प्रकार स्वीकार नहीं कर सकता था तो मेरा निमन्त्रण क्या स्वीकार किया गया ? और बैअत के पश्चात् उस पर अमल करने का कौन सा अवसर रह गया। क्या यह कपट इस प्रकार का है कि लोगों की समझ में नहीं आ सकता था। नि:सन्देह समझ में आया परन्तु जानबूझ कर सच्चाई का ख़ून कर दिया। अत: इन लोगों का यह ईमान है। इतना अन्याय करके फिर अपने विज्ञापनों में हज़ारों गालियां देते हैं जैसे मरना नहीं और कैसी प्रसन्नता से कहते हैं कि महरअली शाह साहिब लाहौर में आए उन से मुक़ाबला न किया। जिन हृदयों पर ख़ुदा ला'नत करे मैं उन का क्या उपचार करूँ। मेरा हृदय फ़ैसले के लिए सहानुभुति रखने वाला है। एक युग बीत गया,

मेरी यह इच्छा अब तक पूर्ण नहीं हुई कि इन लोगों में से कोई सत्य और ईमानदारी एवं नेक नीयत से फ़ैसला करना चाहे परन्तु खेद कि ये लोग सच्चे हृदय से मैदान में नहीं आते। ख़ुदा फ़ैसले के लिए तैयार है और उस ऊंटनी की तरह जो बच्चा जनने के लिए पूंछ उठाती है। युग स्वयं फ़ैसले की मांग कर रहा है। काश ! इनमें से फ़ैसले का अभिलाषी हो। काश ! इनमें से कोई सन्मार्ग प्राप्त हो। मैं विवेक से निमन्त्रण देता हूँ और ये लोग भ्रम पर भरोसा करके मेरा इन्कार कर रहे हैं। इन की आलोचनाएं भी इसी उद्देश्य से हैं कि किसी स्थान पर हाथ पड़ जाए। हे मूर्ख जाति ! यह सिलसिला आकाश से स्थापित हुआ है। तुम ख़ुदा से मत लड़ो। तुम उसे मिटा नहीं सकते। उस का सदैव बोल-बाला रहा है, तुम्हारे हाथ में क्या है कुछ हदीसों के अतिरिक्त जो तिहत्तर फ़िर्क़ों ने बोटी-बोटी करके आपस में बांट रखी है।

★ ★ ★

रिपोर्ट मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया क़ादियान

मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया क़ादियान के तहत दिनांक 14 मई को तालीम उल-इस्लाम स्कूल और अन्य दीगर स्कूल्ज़ में पढ़ने वाले 9वीं, 10वीं,11वीं और 12वीं क्लास के students की Career Counseling की गई। जो मोहतरम नाज़िर साहिब तालीम की ज़ेर-ए-सदारत नूर उद्दीन लाइब्रेरी में मुनाक़िद हुई। इस में मुकर्रम ताहिर गुजराती साहिब, मुकर्रम तय्यब ख़ादिम साहिब मुहतमिम उमूर-ए-तलबा, मुकर्रम सईद उद्दीन मुबश्शिर साहिब नाज़िम उमूर तुलबा के ज़रीया तलबा की इस ताल्लुक़ से राहनुमाई की गई कि वो आइन्दा किस-किस लाईन में higher Education की ग़रज़ से जा सकते हैं। इस के बाद ख़ाकसार ने लाहे-अमल के मुताबिक़ कुछ दीनी और तर्बीयती उमूर की तरफ़ तवज्जा दिलाई। इसके बाद मोहतरम नाज़िर साहिब तालीम ने सदारती ख़िताब फ़रमाया। इस प्रोग्राम में तक़रीबन 140 तुलबा शामिल हुए। अल्हम्दुलिल्ला प्रोग्राम अच्छा रहा। अल्लाह तआला बेहतर नताइज ज़ाहिर फ़रमाए।

इसी तरह दिनांक 11 मई से 22 मई 2023 तक कुल 12 दिन दारुस्सनात में कोर्स करने वाले ख़ुद्दाम की बाद नमाज़ इशा तर्बीयती क्लासस लगाई गईं। जिनमें मुहल्ला मसरूर से रोज़ाना मुख़्तलिफ़ उल्मा सिलसिला को अलग अलग Topic देकर भिजवाया गया। क्योंकि ये students गांव दिहात से आते हैं जहां दीनी मालूमात की काफी कमी है लिहाज़ा उन क्लासस में इस्लाम अहमदियत का परिचय, खुलफ़ा-ए-राशिदीन और खुलफ़ा-ए-अहमदियत का परिचय, औलिया उल्लाह और सहाबा और दरवेशान कादियान और मुक़द्दस मुक़ामात का परिचय, अरकान-ए-इस्लाम, अरकान-ए-ईमान, नमाज़ के मसाइल, मसाजिद वग़ैरा के आदाब शामिल थे। अलहमदुलिल्लाह ये प्रोग्राम भी काफ़ी अच्छा रहा। इन क्लासस में तक़रीबन 20-25 ख़ुद्दाम रोज़ाना शामिल होते रहे। आख़िरी दिन प्रिंसिपल साहिब दारुस्सनात की सदारत में एक सभा आयोजित करके उन क्लासस का समापन किया गया।

इसी तरह दिनांक 28 मई 2023 को मुहतरम सदर साहिब मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत की राहनुमाई

शेष पृष्ठ 32 पर

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

अनुवादक: सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

प्रश्न : एक दोस्त ने हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल की ख़िदमत अक़्दस में गुस्ताख रसूल की सज़ा, क़ुरआन और हदीस को हिफ़्ज़ करने, दुरूद शरीफ़ और अन्य वर्णन और अज़कार, अलग दुआओं और क़ुरआन-ए-करीम की सूरतों को गिन कर पढ़ने के विषय में कुछ इस्तिफ़सारात भिजवा कर उनके बारे रहनुमाई चाही। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल ने अपने पत्र दिनांक 25 दिसंबर 2019 ई. में इन सवालों के निम्नलिखित उत्तर इरशाद फ़रमाए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

क़ुरआन-और-हदीस ने किसी गुस्ताख रसूल को इस दुनिया में सज़ा देने का किसी इन्सान को इख़तियार नहीं दिया। ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी किसी गुस्ताख-ए-रसूल को सज़ा नहीं दी और यदि किसी बदबख़त की ऐसी गुस्ताख़ी पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जैसे मुहिब रसूल ने उस व्यक्ति को सज़ा देने की हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से आज्ञा मांगी तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें भी इसकी आज्ञा नहीं दी। अपने आक़ा-ओ-मुता के नक़श-ए-क़दम पर चलते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी यही तालीम वर्णन फ़रमाई है।

इसके साथ इस्लाम ने दुनिया के अलग देशों के अर्बाब समाधान और अनुबंध और अन्य विषयों के लिए यह रहनुमाई भी वर्णन फ़रमाई है कि किसी के धर्म और उनकी सम्मानित व्यक्तियों का इस तरह वर्णन न किया जाए जो उस धर्म के मानने वालों के लिए तकलीफ़ का बायस हो। अत: एक तरफ़ इस्लाम ने इस दुनिया में किसी इन्सान को किसी गुस्ताख-ए-रसूल को सज़ा देने की आज्ञा नहीं दी तो दूसरी तरफ़ यह तालीम भी दी है कि कोई व्यक्ति किसी दूसरे धर्म और उनके पेशवाओं का अनुचित शब्दों में वर्णन न करे।

(2) क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस को हिफ़्ज़ करने का बेहतरीन तरीक़ उन्हें ध्यान से और कसरत के साथ पढ़ना है। अहादीस में आता है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो की इसी किस्म की शिकायतों हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें, इन उमूर की तरफ़ तवज्जा करने और उन्हें नियमित और कसरत से पढ़ने की तलक़ीन फ़रमाई थी।

(3) दुरूद शरीफ़ में तनदिही पैदा करने का भी यही तरीक़ है कि मुहब्बत और लगन के साथ उसका कसरत से विर्द किया जाए। जिस तरह हम अपने दूसरे कामों में दिलचस्पी लेते और उनकी तरफ़ तवज्जा करते हैं, यदि इन नेक कामों में भी यही मुहब्बत और दिलचस्पी पैदा करें तो इन शा अल्लाह अवश्य मक़सूद हासिल होगा।

दुरूद शरीफ़ का कसरत से विर्द निसदेह बहुत बा बरकत है और इन्सान की हर दुआ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद के कारण ही अल्लाह तआला के हुज़ूर रसाई पाती हैं जैसा कि अहादीस में वर्णन हुआ है। यदि केवल दुरूद शरीफ़ ही पढ़ना हर इन्सान के लिए काफ़ी होता और यह चीज़ उसे बाक़ी दुआओं से

मुस्तग़नी कर देती तो अलग अवसरों पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुद दुरूद शरीफ़ के अतिरिक्त अन्य दुआएं क्यों पढ़ते? और अन्य सहाबा और सहाबियात को अलग किस्म की दुआएं क्यों सिखाते? इसलिए अहादीस में बहुत सी ऐसी दुआओं का वर्णन मिलता है, जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुद भी कीं और सहाबा और सहाबियात को भी सिखाई और यही तरीक़ आपके ग़ुलाम सादिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पवित्र जीवनी में हमें नज़र आता है। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इरशाद إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ के आधार पर यदि कोई व्यक्ति इस नीयत से कि दुरूद भी अल्लाह तआला के फ़ज़लों के हुसूल के लिए एक वसीला है, इस हुस्न ज़न्नी से अपनी समस्त मुनाजात आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजना ही बनाता है तो अल्लाह तआला भी उसकी इस नीयत और हुस्न ज़न्नी के अनुसार इस से व्यवहार करेगा, जैसा कि एक हदीस क़ुदसी में अल्लाह तआला फ़रमाता है أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي अहादीस में अलग दुरूद वर्णन हुए हैं और उलमा-ए-उम्मत में भी अलग किस्म के दुरूद रायज रहे हैं, और उन्होंने उनके अलग नाम भी रखे हुए हैं, जिनमें से कुछ तफ़सीली दुरूद हैं और कुछ संक्षिप्त हैं। अधिक बरकत का बायस और मुबारक दुरूद तो निसदेह वही है जो आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भाषा मुबारक से निकला और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा को सिखाया। इन उमूर में असल चीज़ तो इन्सान की नीयत, मुहब्बत और तवज्जा है कि किस तौर पर वे अल्लाह तआला के प्यार को जज़ब करना चाहता है। अत: जिस नीयत, मुहब्बत और तवज्जा से वे इन उमूर को सरअंजाम देगा अल्लाह तआला तक उस की यह नीयत और ख़ुलूस निसदेह पहुंच जाता है।

4) अहादीस से पता चलता है कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कुछ अहकामात सायल की नफ़सियात को सामने रखकर वर्णन फ़रमाए हैं, इसी लिए एक ही किस्म के प्रश्न पर आपकी तरफ़ से अलग उत्तर भी वर्णन हुए हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जिस व्यक्ति में जैसी कमी महसूस की उसकी इसी के अनुसार रहनुमाई फ़रमाई। इसलिए कुछ दुआओं और अज़कार को गिन कर करने का भी अहादीस में वर्णन मिलता है। जिसमें एक हिक्मत यह भी है कि कम से कम इस क़दर तोअवश्य इन दुआओं और अज़कार को बजा लाओ।

फिर यह भी याद रखना चाहिए कि जिस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस अमर को ख़ूब खोल खोल कर वर्णन फ़रमाया है कि दुआओं और अज़कार को केवल तोते की तरह पढ़ने का कोई लाभ नहीं बल्कि अल्लाह तआला के प्यार को पाने के लिए इन दुआओं और अज़कार में वर्णन इस्लामी तालीम के अनुसार अपनी ज़िंदगी को ढालना, उनके अनुसार अमल करना और अन्य नेकियां बजा लाना भी लाज़िमी है। सूरत अल् फ़ातिहा को कसरत से पढ़ने वाला जब तक इस सूरत में ख़ुदा की सिफ़ात में रंगीन होने की कोशिश नहीं करेगा और क़ुरआन की हिदायत صِبْغَةَ اللّٰهِ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً और हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम تَخَلَّقُوْا بِأَخْلَاقِ اللّٰهِ का वस्त्र नहीं पहनेगा, सिर्फ़ केवल मुख के वर्णन से वह कोई लाभ नहीं उठा सकता। इलम-ए-लद्नी के हुसूल का भी यही माध्यम है क्योंकि इसी तरीक़ पर इन्सान अल्लाह तआला के फ़ज़लों और उसके प्यार को आकर्षित कर सकता है।

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल के साथ लजना इमाइल्लाह हॉलैंड की virtual मुलाक़ात दिनांक 22 अगस्त 2020 ई. में लजना की तरफ़ से पर्दा के सम्बन्ध में होने वाले एक प्रश्न का उत्तर

अता फ़रमाते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल ने फ़रमाया :

उत्तर : यह पर्दा केवल जमात अहमदिया का आदेश नहीं है। नास्त्रात में भी और लजना में भी यह तर्बीयत होनी चाहिए कि पर्दा का आदेश जो है यह क़ुरआन-ए-करीम का आदेश है, अल्लाह और रसूल का आदेश है। इसलिए जमाअत ने वे काम करने हैं जो अल्लाह और रसूल ने फ़रमाए हैं ओर ये ऐसे आदेश हैं, जिनका वर्णन है, स्पष्ट आदेश हैं। क़ुरआन-ए-करीम में जो कुछ ख़ास बातें हैं, अहम, खुली खुली स्पष्ट हिदायात, अहकामात उनमें एक पर्दे का आदेश है। इसलिए हम कहते हैं। इस में यदि केवल यह होता कि किसी चीज़ से इस्तिंबात किया जाता या किसी चीज़ से समझा जाता, उसको interpret किया जाता कि इस से यह मतलब निकलता है तो फिर गुंजाइश निकल सकती थी कि लड़कियां समझें या महिलाएं समझें कि हाँ यहां पर्दे की आज्ञा है और यहां नहीं है। लेकिन जब स्पष्ट आदेश आ गया तो फिर हमने इस आदेश पर अमल करना है और करवाना है। ये बातें अच्छी तरह लड़कियों के दिमाग़ों में डाल दें तो पर्दा की तरफ़ भी तवज्जा पैदा होगी। असल चीज़ यह पैदा करें कि हया ईमान का हिस्सा है, हदीस है। जब हया पैदा हो जाएगी तो ख़ुद बख़ुद पर्दे की तरफ़ भी तवज्जा पैदा हो जाएगी। चाहे वे यूनीवर्सिटी में पढ़ने वाली लड़की है, वह अपने हया के दायरा में रहेगी, अपने लिबास का ख़्याल रखेगी और फिर पर्दा का भी ख़्याल रखेगी।

इसी मुलाक़ात में एक मैंबर लजना ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि मेम्बरात लजना के अख़बारों में लिखने के लिए कौन से कार्य किए जा सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : जो भी contemporary issues आते हैं और अख़बारों में मज़मून लिखे जाते हैं। या आप लोग महसूस करते हैं कि आजकल सोशल मीडीया पर या कहीं यह डिस्कस हो रहे हैं। उस के लिए आप सोशल मीडीया पर, लजना की वेबसाइट पर उत्तर दें ताकि awareness हो। हर एक को पता लगे कि यह उसका असल उत्तर है, असल चीज़ यह है। इसी तरह जो लिखने वाली हैं इन issues के ऊपर इस्लाम के दिफ़ा के लिए अख़बारों में लिखें कि तुम लोग कहते हो कि इस्लाम यह कहता है, यह कहता है। जबकि इस्लाम की तालीम तो यह है। तो जितनी लिखने वालियाँ हैं उनको encourage करें कि सोशल मीडीया पर जो अलग topics आते हैं इन topics को ही लेना है ताकि attraction पैदा हो। अधिक से अधिक लोग पढ़ें और तवज्जा दें और आपकी तरफ़ तवज्जा हो। पश्चिम में महिलाओं के issues के ऊपर एतराज़ उठाया जाता है कि महिला को आज़ादी नहीं है, महिला को पर्दे की restrictions हैं, महिला को अमुक पाबंदी में रखा जाता है, महिला पर अमुक अत्याचार किया जाता है। इस पर महिलाओं को ही लिखना चाहिए कि तुम यह कहते हो। मैं एक महिला हूँ, मैंने ये ये ये लिखा है। यहां यू.के में भी लजना लिखती है और उसका अच्छा असर होता है। बजाय इसके कि मर्द उत्तर दें, महिलाएं उस का उत्तर दें तो अधिक अच्छा असर होता है। इसलिए अपनी एक टीम बनाएँ। इस का इलम भी आपको होना चाहिए। इस्लामी तालीम का इलम भी होना चाहिए और जब लिखें तो तैयारी करके बाक़ायदाfacts and figures के लिहाज़ से लिखना चाहिए ताकि अगले को impress भी कर सकें।

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक मैंबर लजना ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल की ख़िदमत अक़्दस

में अर्ज़ किया कि हॉलैंड में अभी बहुत कम मेम्बरात लजना ऐसी हैं जो independently अच्छा लिख सकती हैं, उस के लिए हम क्या कर सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : जो कम हैं उनको guide करें तो वे तो तैयार हो जाएँगी नाँ? जब एक टीम दो की, चार की, छः की, आठ की जितनी भी हैं वह तैयार हो जाएँगी तो उनको देख देख के फिर मज़ीद और भी तैयार होती रहेंगी। कम या अधिक का प्रश्न नहीं। काम करने वाला तो एक भी हो तो इन्क़िलाब आ जाता है। तो जब उत्तर देंगी तो ख़ुद ही लोग उत्तर लेने के लिए आपके पीछे पड़ेंगे। फिर आप मज़ीद उत्तर लिखना शुरू कर देंगी। और फिर दूसरों को भी encouragement हो जाएगी कि हम भी शामिल हों, हम भी लिखें। किसी भी चीज़ को करने के लिए या लोगों को उभारने के लिए कोई incentive होता है तो वह incentive यही है कि जब दो-चार के नाम अख़बारों में आएँगे तो बाकियों को भी शौक़ पैदा होगा कि हमारा भी नाम आए, हम भी लिखने की कोशिश करें। फिर आहिस्ता-आहिस्ता और बढ़ती जाएँगी।

प्रश्न : लजना इमाइल्लाह हॉलैंड की इसी 22 अगस्त 2020 ई. की virtual मुलाक़ात में एक मैंबर लजना ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत-ए-अक़्दस में अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला की ज़ात सत्तार है और बच्चों के रिश्ते करते वक़्त जब हम लड़का लड़की या उनके ख़ानदान के बारे में तहक़ीक़ करवाते हैं तो क्या यह ठीक है? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : अल्लाह तआला सत्तार तो है और अल्लाह तआला सत्तारी को पसंद करता है। इस का मतलब यह है कि लोगों के ऐब यदि किसी को पता लग जाएं तो वे लोगों को बताने नहीं चाहिएं और पर्दापोशी करनी चाहिए। लेकिन रिश्ते के बारे में क़ुरआन-ए-करीम का यह भी आदेश है कि सच्ची बात से काम लो। जो भी रिश्ता है, लड़के और लड़की में जो भी नुक़्स हैं, बातें हैं उनका एक दूसरे को पता लगना चाहिए। बिल्कुल सच्चाई से काम लो, कोई ऐच पेच न हो ताकि बाद में रिश्ता में दराड़ें न पढ़ें। इसलिए हर बात खुल के बता देनी चाहिए। रिश्ते का मुआमला बड़ा sensitive मुआमला है। बाद में लड़ाईयां होती हैं, बातें होती हैं कि हमें यह नहीं बताया, वह नहीं बताया। तो इसलिए बेहतर है कि रिश्ता करते हुए यह सारी बातें बताओ और क़ुरआन-ए-करीम की निकाह की आयात जो हैं उनमें इसी लिए सच्ची बात के बारे में ज़ोर दिया गया है। सत्तारी का एक आदेश अपनी जगह है वह यह है कि तुमने किसी के ऐब ज़ाहिर नहीं करने। तुम जो रिश्ता बता रहे हो तो यह बता दो कि यह रिश्ता है। बाक़ी यदि आपको उसके बारे में कोई कमज़ोरी का पता भी है, जिस का रिश्ता तजवीज़ कर रहे हैं तो यह बता दें कि यह रिश्ता है तुम लोग ख़ुद ही आपस में बैठो, मिलो, देखो, दुआ करो और फिर फ़ैसला करो। यदि आपने सत्तारी करनी है तो यह है। न यह है कि रिश्ता बताने से पहले आप उसको यह कह दें कि इस में तो यह नुक़्स है, यह नुक़्स है, यह नुक़्स है और उस का रिश्ता ही न हो। कह दें यह रिश्ता है, तजवीज़ है। इस में अच्छाईयां क्या हैं, बुराईयां क्या हैं? यह तुम लोग ख़ुद मिल के बैठ के देखो और यदि तुम लोगों को पसंद आता है तो कर लो, फिर दुआ कर के फ़ैसला करो। असल चीज़ यह है कि अल्लाह तआला आलिमुलग़ैब है। और ग़ैब का इलम अल्लाह तआला को है कि कौन सा रिश्ता किस के लिए बेहतर है। इसलिए दुआ कर के फ़ैसला करना चाहिए। इसलिए अल्लाह तआला ने कहा है कि इस्तिख़ारा भी करना चाहिए। इस्तिख़ारा का मतलब ख़ैर माँगना है। अल्लाह

तआला से ख़ैर मांगनी चाहिए कि इस रिश्ता में ख़ैर है तो मेरे लिए बेहतरी हो और आसानी से रस्ते खुल जाएं। और यदि इस रिश्ता में ख़ैर नहीं है तो इस रिश्ता में मेरे लिए रोक पड़ जाए। तो सत्तारी का मतलब यह भी नहीं है कि रिश्ता करते हुए जो हक़ायक़ हैं वे भी न बताए जाएं। यदि आपस में दोनों फ़रीक़ मिल बैठते हैं तो बेहतर यही है कि सच्ची बातों से काम लेते हुए आपस में जो भी अच्छाईयां बुराईयां हैं। एक दूसरे का पता लगना चाहिए। हर व्यक्ति perfect नहीं होता, हर एक में बुराईयां भी होती हैं अच्छाईयां भी होती हैं। यह भी मतलब नहीं है कि बुराईयों का ऐलान करते फिरो। लेकिन यदि कोई ऐसी बात हैं जिस से बाद में रिश्ता में दराड़ पड़ने का ख़तरा हो, टूटने का ख़तरा हो तो बेहतर है कि वे बुराई या वे बात पहले ही बता दो। कोई कमज़ोरी है, कोई बीमारी है, किसी लड़की में यदि औलाद पैदा करने की सलाहियत नहीं या किसी मर्द में कोई कमज़ोरी है तो वह पहले ही एक दूसरे को पता लग जानी चाहिए ताकि बाद में मसायल पैदा न हों।

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक मुरब्बी साहिब ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर ने शुरू में नमाज़ तहज्जुद का वर्णन फ़रमाया है। सर्दीयों में तो इन्सान आसानी से तहज्जुद के लिए उठ सकता है लेकिन मुस्तक़िल तौर पर और उन देशों में गरमियों में इस की आदत डालने का बेहतरीन ज़रीया क्या है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने इस प्रश्न के जवाब में फ़रमाया :

उत्तर : यह तो depend करता है कि कितना अल्लाह तआला से आपका ताल्लुक़ है। कितनी अल्लाह से मुहब्बत है। बाक़ी कामों के लिए वक़्त निकाल लेते हैं नाँ? अगर जर्मनी में रहते हुए रात को दस बजे इशा की नमाज़ होती है या साढ़े दस बजे होती है और सुबह ढाई बजे, पौने तीन बजे या तीन बजे होती है। (यहां बल्कि यू.के में इस से जल्दी सहरी हो जाती है। वहां फिर एक घंटा लेट सहरी होती है। आधा पोना घंटे का अंतर होता है। तो दो घंटे सोएँ, डेढ़ घंटा सोएँ। फिर उठके नमाज़ पढ़ें। इस के बाद नमाज़-ए-फ़ज्र के बाद फिर एक दो घंटे सो जाएं। यह तो अपना प्रोग्राम ख़ुद बनाना पड़ता है। अगर किसी काम के करने की दिल में तड़प हो तो सब रस्ते निकल आते हैं। जब जामिआ में आपके इमतेहान हो रहे होते थे और पढ़ने का शौक़ होता था तो रात को उठ के पढ़ते थे नाँ? या कोई फ़िक्र पैदा हुई हो तो तहज्जुद पढ़ते हैं नाँ? यह तो सोच की बात है। अगर आप सोच को इस तरह ढाल लेंगे कि मैंने यह काम करना है तो अल्लाह तआला मदद करता है। तो लोग तो रात को घंटा डेढ़ घंटा सोते हैं। इस के बाद उठ के तहज्जुद पढ़ लेते हैं। फिर सुबह नमाज़ फ़जर के बाद जब बाक़ी वक़्त हुआ सो गए। यह तो वक़्त निकालना पड़ता है। इस के बाद सारा दिन भी तो आपको मिल जाता है। दोपहर को नींद पूरी करने के लिए एक घंटा सो लिया करें। यह तो कोई ऐसा मसला नहीं है। जवानी में ही इबादत होती है जो होती है। आप तो नौजवान लोग हैं आप लोगों का ही वक़्त है। यही वक़्त है इस वक़्त से लाभ उठा लें। और इबादात का जितना हक़ अदा कर सकते हैं करने की कोशिश करें।

दर जवानी तौबा करदन शेवा-ए-पैग़ंबरी
वक़्त-ए-पीरी गर्ग ज़ालिम मी शवद परहेज़गार

प्रश्न: इसी मुलाक़ात में एक मुरब्बी साहिब ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि देखने में आता है कि नौजवान नसल का ज़्यादा वक़्त बाहर के समाज के अधीन गुज़रता है, उन्हें हम जमाअत के क़रीब कैसे

ला सकते हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने इस प्रश्न के जवाब में फ़रमाया :

उत्तर : तो ठीक है नौजवान मुरब्बियान जो हैं यह उनका काम है। आप लोग यहीं पले हैं, यहीं बढ़े हैं, यहीं आप ने ग्रेजुएशन की है या जो भी तालीम हासिल की है, सैकण्डरी स्कूल की जो तालीम हासिल की या abitur किया या जो भी किया तो आप लोगों को इस माहौल का पता है। आप भी यहां रहते हैं। इसके मुताबिक़ देखें कि किस तरह उन लोगों की तर्बीयत कर सकते हैं। और इसी लिए मैं कहता हूँ कि द्सोतियाँ बनाएँ, इसी लिए ज़ेली तंज़ीमें भी हैं। ज़ेली तन्ज़ीमों का भी काम है कि अपने लड़कों को अपने साथा involve करें। और नौजवान मुरब्बियान जितने भी हैं उनका काम है कि उनकी मदद करें। इस तरह करेंगे तो इन शा अल्लाह तआला ठीक हो जाएगा। यह तो कोशिश है, ठीक है माहौल यह है। माहौल ही तो हमारे लिए चैलेंज है। इस माहौल में ही हमने उनके हालात के मुताबिक़ कोशिश करनी है। कोई नई चीज़ तो नहीं है, कोई नया फ़ार्मूला तो नहीं ऐसा बन जाएगा कि आप उसको अप्लाई करेंगे तो सारे लोगों की इस्लाह हो जाएगी और वे वलीउल्लाह बिन जाऐंगे, कोई नहीं बनेगा। न एक दिन में आप लोग अपने टार्गेट achieve कर सकते हैं। यह तो एक मुसलसल कोशिश है ताकि उनका जमाअत के अफ़राद के साथ ताल्लुक़ पैदा रहे और उनको यह एहसास होता रहे कि हाँ हमारी एक और ज़िम्मेदारी भी है कि जो हमने दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखने का अह्द किया हुआ है उसको भी हमने पूरा करना है। यह एहसास आहिस्ता-आहिस्ता दिलाते रहें। आपकी तन्ज़ीमों का अफ़राद जमाअत से या ज़ेली तन्ज़ीमों के मैंबरान जो हैं , ख़ुद्दाम से, लजना से, अंसार से, उनका जितना राबिता होगा, उतना ज़्यादा असर होगा। मुरब्बियान उनसे ताल्लुक़ रखने का अपने आपको जितना ज़्यादा वक़्त देंगे उतना ज़्यादा असर होगा। यह तो एक मुसलसल कोशिश है और यह जारी रखनी है। इस के लिए कोई hard and fast फ़ार्मूला नहीं बनाया जा सकता। हर एक के हालात के मुताबिक़, हर एक शख़्स की नफ़सियात के मुताबिक़ ये फ़ैसले करने होंगे। और आप नौजवान मुरब्बियान पर यही trust किया गया है कि आप लोग जो वहां के पढ़े लिखे हैं वे ज़्यादा बेहतर तौर पर यह तर्बीयत का काम कर सकते हैं। अगर आपकी अपनी तर्बीयत सही हो जाएगी और जैसा कि मैंने शुरू में कह दिया था कि ताल्लुक़ बिल्लाह पैदा हो जाएगा तो फिर आप देखेंगे कि आप लोग इन्क़िलाब लाने वाले भी बन जाऐंगे इन शा अल्लाह तआला। और मुझे उम्मीद है कि इन शा अल्लाह नौजवान मुरब्बियान अगर एक अज़्म से उट्ठेंगे तो एक इन्क़लाब पैदा हो सकता है। क्योंकि आप लोग यहां के माहौल में पले बढ़े हैं। पहले तो होता था कि कोई पाकिस्तान से आया, कोई बाहर से मुरब्बियान आए, उनको सही तरह से पता नहीं था, ज़बान पर पूरी तरह गिरिफ़्त नहीं थी। आपको तो ज़बान पर भी पूरी तरह grasp है, comprehension है और इसको आप अच्छी तरह अदा कर सकते हैं। यहां के माहौल में रहे हुए हैं, माहौल का भी पता है। इसी तरह आप लोग ख़ुद नए रास्ते explore करें कि किस तरह हमने उनकी तर्बीयत करनी है, किस तरह उनको attach करना है, किस तरह हमने नई नसल को ज़ाए होने से बचाना है।

प्रश्न : इसी virtual मुलाक़ात दिनांक 15 नवंबर 2020 ई. में एक मुरब्बी साहिब ने हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि कुछ दूसरी कौमें जो जमाअत अहमदिया में शामिल हो रही हैं, वे जमाअत के इलमो कलाम से तो बहुत प्रभावित होती हैं लेकिन जमाअती निज़ाम और ख़ुसूसन माली क़ुर्बानी में वे

पूरी तरह शामिल नहीं हो पातीं और मुक़ामी जमाअत के साथ भी उनके मुस्तहकम राबते नहीं हो पाते, इस बारे में हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में राहनुमाई की दरख़ास्त है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर: बात यह है कि जमाअती निज़ाम को भी उन के लिए इतना मुश्किल न करें। इसी लिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह ने यही कहा था, और उनसे पहले भी खलिफ़ा यही कहते रहे और मैं भी यही कहता हूँ कि जो नए आने वाले नौ मुबाईन हैं वे जब आते हैं और आपके साथ शामिल होते हैं तो उनको पहले तीन साल के अरसा में समझाएँ कि सिस्टम क्या है न कि उनसे इस तरह सुलूक करें कि वे कोई वलीउल्लाह हैं या सहाबा की औलाद में से हैं या पैदाइशी अहमदी हैं। पैदाइशी अहमदी तो बल्कि कम जानते हैं वे जो नए आने वाले हैं वे दीनी इलम भी आपसे ज़्यादा जानते हैं। अक्सर मैंने देखा है जो सही तरह सोच समझ के जमाअत में शामिल होता है वे नमाज़ों की तरफ़ भी तवज्जा देने वाला ज़्यादा होता है, वे इस्तग़फ़ार करने वाला भी होता है, वे तहज्जुद पढ़ने वाला भी होता है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों को समझने की कोशिश भी करने वाला होता है। तो बहरहाल हमारा यह काम नहीं कि जो भी शामिल होता है इस को पहले दिन से ही (तमाम चीज़ों पाबंद) न करें। इसी लिए तीन साल के लिए उनके ऊपर चंदा का निज़ाम लागू नहीं किया जाता है। तीन साल का अरसा उनकी ट्रेनिंग का होता है ताकि इस में तर्बीयत हो जाएगी। उनको बताएं कि यह जमात का निज़ाम है लेकिन तुम अभी नए हो तुम इसको पहले ग़ौर से देखो, समझो। लेकिन फिर मसलन माली क़ुर्बानी है, अल्लाह तआला ने क्योंकि माली क़ुर्बानी की तरफ़ तवज्जा दिलाई है तो तुम वक़्फ़ जदीद और तहरीक जदीद का चंदा जो है इस में जितनी तुम्हारी हैसियत है तुम दे सकते हो चाहे साल का एक यूरो दो ताकि तुम्हें एहसास पैदा हो कि जमाअत से तुम्हारी कोई attachment है। इसी तरह नमाज़ों के बारे में उनको बताएं कि नमाज़ सीखो। अब जब ग़ैर मुस्लिमों से एक मुस्लमान होता है, अहमदी मुस्लमान होता है। इस को सूरत फ़ातिहा सिखानी शुरू करें। जब उसको सूरत फ़ातिहा आ जाए, याद हो जाए। तो जब नमाज़ उसने पढ़नी है तो नमाज़ के फ़रायज़ उसको बताएं कि देखो अल्लाह तआला ने नमाज़ फ़र्ज़ की है। पहली बुनियादी चीज़ तो नमाज़ हैं नां? तो नमाज़ अल्लाह तआला ने जब फ़र्ज़ की है तो इस में आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सूरत फ़ातिहा पढ़नी ज़रूरी है। नमाज़ की जो बुनियादी चीज़ है वह सूरत फ़ातिहा है और सूरत फ़ातिहा के बग़ैर नमाज़ नहीं होती इसलिए उस को पहले सूरत फ़ातिहा याद कराईं। फिर उसको कहें कि अच्छा तुम तर्जुमा याद करो। या उसे कह दें कि तुम तर्जुमा याद कर लो ताकि जो बिलजेहर नमाज़ें हैं उनमें जब इमाम सूरत फ़ातिहा पढ़ रहा है तो साथ साथ तुम्हें दिल में पता लगता रहे कि इमाम क्या पढ़ रहा है। फिर उसको ख़ुद शौक़ पैदा होगा कि सूरत फ़ातिहा याद कर ले। यहां कई अंग्रेज़ अहमदी हुए हैं मैं ने उनको देखा है कि उन्होंने बड़े शौक़ से उसे याद किय। या किसी भी मुल्क के मेरे से जो कोई भी मिलते हैं उनको जब मैं कहता हूँ तो वे सूरत फ़ातिहा याद करते हैं और बड़ी अच्छी तरह अल्लाह के फ़ज़ल से याद कर लेते हैं और समझते भी हैं। तो तीन साल का अरसा उनको एक ट्रेनिंग देने का अरसा है। जब उनकी तीन साल में वे ट्रेनिंग हो जाएगी तो फिर उनको जमाअत के सिस्टम में integrate होना मुश्किल नहीं लगेगा।

अगर आप पहले दिन से उनसे उम्मीद रखें कि वे वलीउल्लाह बन जाएं तो वहा नहीं हो सकता। (ये उम्मीद रखना) फिर आप लोगों का क़सूर है। तीन साल का अरसा रखा ही इसलिए गया है कि न उनसे चंदा लेना है, न उनको ज़्यादा ज़ोर देना है। उनकी सिर्फ तर्बीयत करनी है कि जमात का निज़ाम क्या है। और उनके harshly तर्बीयत करनी है बल्कि प्यार से, मुहब्बत से समझाना है कि नमाज़ क्या चीज़ है? नमाज़ क्यों फ़र्ज़ है? नमाज़ पढ़ो। तुम एक नमाज़ पढ़ोगे, दो पढ़ोगे, तीन पढ़ोगे चार पढ़ोगे। जो पक्का मोमिन है इस पर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं और इस की वजूहात क्या हैं? नमाज़ जब पढ़ते हैं इस की हिक्मत क्या है? तो इल्मुल कलाम से जो मुतास्सिर होते हैं उनको फिर नमाज़ की हिक्मत समझाएँ। अगर इस में इतनी अक़्ल है कि इस को इल्मुल कलाम की बातें पता लग गईं। फ़लसफ़ा पता लग गया। गहराई पता लग गई। तो फिर उसको यह कहना कि नमाज़ नहीं पढ़ोगे तो जहन्नुम में चले जाओगे। यह नहीं कहना उसको। उसको प्यार से ये कहें कि नमाज़ की हिक्मत क्या है। पाँच नमाज़ें क्यों फ़र्ज़ की गई हैं। जब उसको हिक्मत समझ आ जाएगी तो आपसे ज़्यादा नमाज़ें पढ़ने लग जाएगा। मैं ने तो तजुर्बा करके यही देखा है। इसी तरह चंदा है। चंदे की हिक्मत क्या है? और अल्लाह तआला पर ईमान की हिक्मत क्या है? तो सिर्फ इल्मुल कलाम से मुतास्सिर होना बात नहीं है इस इल्मुल कलाम को ही ले के आगे उसको हिक्मत समझाएँ। जिस इल्मुल कलाम से वे मुतास्सिर हुए हैं उसी इल्मुल कलाम को ज़रीया बनाएँ। उदाहरणत: "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" है। लोग मुतास्सिर हो कर उसे पढ़ते हैं। अब "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" से ही अल्लाह तआला के वजूद का पता लग जाता है। "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" से ही इबादत की हक़ीक़त पता लग जाती है। "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" से ही क़ुर्बानी का मयार पता लग जाता है। "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" से ही जन्नत और दोज़ख़ का नज़रिया पता लग जाता है। तो ये सारी चीज़ें जब उनके इल्मुल कलाम से ही उनको समझाएँगे तो उनको समझ आ जाएगी। तो आप जो बात कर रहे हैं इस की दलील तो आपके पास ख़ुद मौजूद है उसी दलील को इस्तिमाल करें। शेष........

★ ★ ★

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا
(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ
الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ
Prop : Sk. Ishaque
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FFT
Fruits
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
PRAN
MANGO
JUICEPAK
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
Paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

पृष्ठ 20 का शेष, रिपोर्ट मजलिस.....

से Welcome to Majlis Khuddamul Ahmadiyya प्रोग्राम के तहत उन ख़ुद्दाम को दफ़्तर बुलाया गया जो इसी साल इतफ़ाल अहमदिया से ख़ुद्दाम की तंज़ीम में शामिल हुए हैं। ये कल 26 ख़ुद्दाम थे अहद मजलिस दोहराने के बाद ख़ुद्दाम को मजलिस में ख़ुश-आमदीद कहा गया और फिर मजलिस को कायम करने का उद्देश्य बताया गया। आइन्दा इन ख़ुद्दाम पर पड़ने वाली ज़िम्मेदारियों की तरफ़ तवज्जा दिलाई गई। नमाज़ बाजमाअत की पाबंदी, अच्छे अख़लाक़ अपनाने, हर माह हुज़ूर अनवर को ख़त लिखने, सलाम और टोपी की आदत, बावक़ार लिबास पहनने, अच्छे दोस्त बनाने और हमेशा जमात और मजलिस के कामों के लिए आगे आगे रहने के बारे में भी समझाया गया। अल्हम्दुलिल्ला प्रोग्राम बहुत अच्छा रहा।

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमारी इन कोशिशों को क़बूल फ़रमाए और उनके बेहतरीन नताइज ज़ाहिर फ़रमाए। और कादियान के जुमला ख़ुद्दाम-व-अतफ़ाल की बेहतर से बेहतर रंग में तर्बीयत की तौफ़ीक़ फ़रमाए। आमीन

वस्सलाम

ख़ाकसार

मुहतमिम मुक़ामी मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत